नई दिल्ली नगरपालिका परिषद्

पालिका समाचार

नई दिल्ली
पालिका समाचार
वर्ष: 44, अंक: 3-4, मार्च-अप्रैल, 2015
(द्विमासिक)

सम्पादक - मण्डल

पालिका समाचार
संरक्षक
जलज श्रीवास्तव
अध्यक्ष

मुख्य सम्पादक
निखिल कुमार
सचिव

जगजीवन बख्शी
उप-मुख्य सम्पादक

अनीता जोशी
प्रकाशक सम्पादक

सुनीता बोहाडिया
कार्यकारी सम्पादक

रीमा कामरा
सहायक सम्पादक

उषा रौतेला
अरविन्द रानी
सुमन कुमार
सहयोग

लक्ष्मण सिंह रमोला
परामर्शदाता

मूल्य
एक प्रति : ₹ 20/-
वार्षिक : ₹ 100/-
पाँच वर्षों हेतु : ₹ 400/-

सम्पादकीय

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के एक शताब्दी के इतिहास में अधिकारियों/कर्मचारियों ने परिषद् के विकास में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया है तथा इस निकाय के निर्माण में अपनी अहम् भूमिका निभायी। नई शताब्दी में परिषद् क्षेत्र को विश्व-स्तर की एक स्मार्ट-सिटी बनाना हम सभी का एक सांझा स्वप्न है। यह स्वप्न तभी पूरा हो सकता है, जब इस प्रयास में सभी निवासियों, उद्यमियों तथा पर्यटकों को सक्रिय रूप से भागीदार बनाया जाए। 'स्वच्छ भारत अभियान', 'पार्किंग आटोमेशन एवं मोबाइल ऐप', 'फ्री वाई-फाई', 'सोलर सिटी प्रोजेक्ट तथा 3 डी डिजिटल मैपिंग' - ये इस दिशा में किए गए कुछ प्रयास हैं, जिन्हें कड़ी मेहनत से पूर्ण करके बेहतर नगरपालिका व्यवस्था का उदाहरण कायम किया जा सकता है। स्वस्थ पर्यावरण, आधुनिक संचार व यातायात माध्यम व बेहतर जीवन-शैली से युक्त स्वच्छ-शहर में ही स्मार्ट-सिटी का अनुभव किया जा सकता है।

परिषद् ने उपेक्षित महिलाओं के लिए ऊर्जा परियोजना का आरंभ करके उनके जीवन में एक नई सुबह लाने का प्रयास किया है। परिषद् ने जरूरतमंद व मेधावी छात्राओं के लिए छात्रावास बनाया है। महिला यात्रियों के लिए परिषद् कैब सेवा भी चलाएगी। इसके अन्तर्गत महिलाओं को व्यवसायिक ड्राइवरों के रूप में प्रशिक्षित किया जा रहा है।

किसी भी देश और समाज की उन्नति के लिए उस देश के नागरिकों का स्वस्थ होना अति आवश्यक है। स्वस्थ नागरिक ही देश को समृद्ध एवं विकसित बनाते हैं। इस दिशा में परिषद् अपने क्षेत्र के नागरिकों को अन्य सुविधाएँ देने के अतिरिक्त स्वास्थ्य के प्रति भी सचेत कर रही है। राहगिरी, आउटडोर जिम की स्थापना, फुटबाल एकेडमी आदि इसके ज्वलंत उदाहरण है।

पिछले वर्ष परिषद् कर्मचारियों के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएँ प्रारंभ की गई, जिसमें "कौशल विकास प्रशिक्षण केन्द्र" एवं लड़कों के लिए तकनीकी संस्थान की स्थापना प्रमुख है। भविष्य में भी परिषद् अधिकारी एवम् कर्मचारीगण पूर्ण समर्पण तथा निष्ठा से इस संगठन के विकास हेतु प्रयासरत रहेंगे।

मुख्य सम्पादक

इस अंक में

परिषद् गतिविधियाँ 3-12

बजट समाचार 13

भारतीय महिलायें 15

- के. आर. पाण्डे

हाँ, मैं बोल रहा हूँ 17

- ए॰ के॰ बहुगुणा

नज़र, कहानी, ज़ेहन, चाहत 18

- नितिन नारंग 'समर'

मेरे पिता को चाहिए

टेसू के फूल 18

- ओम उपाध्याय

'.......... और भाग्यशाली बन जाओ' 19

- हेमलता

गाय की महिमा 21

- डॉ॰ राम सिंह

मन ही मन्दिर 22

- मन मोहन गुप्ता

इस बार फिर 24

- जसविंदर शर्मा

अतीत का सच 24

- अनिल कुमार शुक्ला

दवाई खरीदते समय 25

- ओमप्रकाश बजाज

बाल कविताः 'होमी गोली' 26

- राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय

मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रुः"आलस्य" 26

- श्रीमती पुष्पलता राय

दो लघुकथाएँ

(1) पगड़ी, (2) भ्रम 28-29

- डॉ. पूरन सिंह

वर्ष प्रतिपदा (नव संवत्सर 2072) 30

- महेश चन्द्र शर्मा

दो लघुकथाएँ- दोमुंहे, अपने 32

- ओमप्रकाश बजाज

गुरू का महत्व, पाती प्यारी भरी 34

- नियति जोशी

व्यवसायीकरण का प्रभाव खेल पर 35

- चन्द्र शेखर भट्ट

बच्चे और मोबाइल फोन 37

- आशा ठुकराल

कहां खो गई नानी-दादी की कहानी 38

- सन्दीप कपूर

शिक्षा के क्षेत्र में स्पेशल-एजुकेशन

एक उपलब्धि 40

- मनीषा वैद

रचनाओं में अभिव्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, उन पर सम्पादक-मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सम्पादक को रचनाओं में संशोधन एवम् काट-छांट करने का पूरा अधिकार हैं। इन विचारों पर किसी प्रकार के आक्षेप का दायित्व भी लेखकों का ही है किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा- **सम्पादक**

सम्पर्क सूत्र

सम्पादक-पालिका समाचार, हिन्दी विभाग, कमरा नं. 1209, 12वीं मंजिल, पालिका केन्द्र, नई दिल्ली- 110001

दूरभाष : 41501354 - 70/3209 वेबसाइटः www.ndmc.gov.in

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के लिए अनीता जोशी द्वारा प्रकाशित तथा

नूतन प्रिन्टर्स, एफ-89/12, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेज़-1, नई दिल्ली-110020 द्वारा मुद्रित, फोन नं. 011-26817055

NDMC
नई दिल्ली नगरपालिका परिषद्
पालिका समाचार

परिषद् गतिविधियाँ

पालिका परिषद् द्वारा घर–घर से कूड़ा एकत्रित करने पर कार्यशाला

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् ने **21 फरवरी, 2015** को पालिका परिषद् क्षेत्र में घर–घर से कूड़ा एकत्रित करने की योजना के कार्यान्वयन पर एक कार्यशाला का आयोजन किया । यह योजना नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् क्षेत्र की सभी आवासीय कालोनियों, मार्किटों, वाणिज्यिक परिसरों, पिकनिक स्थलों, बड़े संस्थानों, कार्यालयों, पार्कों इत्यादि में लागू की जा रही है ।

इस कार्यशाला में 200 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया । ये प्रतिनिधि गैर सरकारी संगठनों, चिन्तन–पर्यावरण एवं अनुसंधान ग्रुप, टाटा ऊर्जा अनुसंधान संस्थान, आवासीय कल्याण समितियों और मार्किट एसोसिएसनों से आए थे। इस अवसर पर आए सभी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने अपने विचारों का आदान–प्रदान किया और विशेषज्ञों ने कार्यशाला को संबोधित भी किया ।

इस कार्यशाला के अवसर पर एक नुक्कड़ नाटक का भी आयोजन किया गया, इसमें घर–घर से कूड़ा एकत्रित करने एवं उसके निपटान, उपयोगिता और तरीकों को दर्शाया गया था।

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् क्षेत्र में घरेलू कूड़ा सौ प्रतिशत घर–घर से ही एकत्रित किया जाएगा और इसको अलग–अलग करके री–साइकल भी किया जाएगा । इस बात पर भी जोर दिया जाएगा कि वैज्ञानिक ढ़ग से एकत्रित और उसका उचित प्रबंधन करने से कूड़े को एक संसाधन के रुप में फिर से उपयोग में लाया जा सके।

पालिका परिषद् कर्मचारियों को होली के अवसर पर एलईडी बल्बों का वितरण

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् ने माननीय प्रधानमंत्री जी के 'प्रकाश–पथ कार्यक्रम' को लागू करने के उद्देश्य से अपने सभी कर्मचारियों को होली के पावन पर्व पर तीन–तीन एलईडी बल्ब दिये। इससे पूर्व कर्मचारियों को होली पर मिठाई वितरित की जाती थी, उसके बदले अब से एलईडी बल्ब देने से न केवल कर्मचारियों के जीवन में उज्जवलता और हर्षोल्लास आएगा, बल्कि इससे उनके घरेलू बिजली के बिलों में भी बचत होगी। लगभग बीस हजार एलईडी बल्ब वितरित किए जा रहे हैं। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् दिल्ली में ऐसा पहला बिजली वितरण निकाय हो गया है जो 'प्रकाश–पथ कार्यक्रम' को सर्वप्रथम अपने क्षेत्र में लागू कर रहा है ।

ज्ञातव्य हो कि इससे पूर्व जनवरी में नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के अध्यक्ष श्री जलज श्रीवास्तव ने प्रकाश–पथ कार्यक्रम को अपने क्षेत्र में लागू करने के लिए 'पालिका नवज्योति मिशन' की घोषणा की । होली के अवसर पर एलईडी बल्बों का वितरण इसी मिशन के अन्तर्गत किया जा रहा है ।

इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए पालिका परिषद् क्षेत्र में सड़कों पर लगी परम्परागत लाइटों को भी एलईडी बल्बों से बदला जाएगा । नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् जल्दी ही अपने सभी घरेलू विद्युत उपभोक्ताओं को एक योजना के तहत एलईडी बल्ब वितरित करने की प्रक्रिया पर भी काम कर रही है । जिसके अन्तर्गत दो एलईडी बल्ब सभी पंजीकृत घरेलू विद्युत उपभोक्ताओं को 104 रूपए प्रति की दर से दिए जाएगे ।

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् इस योजना के हजारों घरों तक पहुँचने से यह आशा करती है कि इसके परिणामस्वरूप ऊर्जा की एक बहुत बड़ी मात्रा में बचत होगी ।

परिषद् गतिविधियाँ

नवयुग विद्यालयों ने स्थापना दिवस मनाया

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् ने 25 फरवरी 2015 को नवयुग विद्यालयों का 42वॉ स्थापना दिवस पालिका परिषद् के कनवेंशन सेंटर में मनाया ।

इस अवसर पर नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के अध्यक्ष, श्री जलज श्रीवास्तव ने नवयुग विद्यालयों के पूर्व छात्रों और अध्यापकों के लिए एक वेबसाइट – ''नवयुग स्कूल – यादें'' – का शुभारंभ किया । श्री जलज श्रीवास्तव ने नवयुग विद्यालयों के पुरानें गीतों की भी एक सीडी 'नवयुग के तराने' नाम से जारी की ।

इस कार्यक्रम में नवयुग विद्यालय के अनेक पूर्व सदस्यों, छात्रों और अध्यापकों ने भाग लिया और अपनी–अपनी पुरानी यादों का भी आदान–प्रदान किया। इस अवसर पर ''कल के नागरिकों के लिए विद्यालय जीवन की पुनर्व्याख्या'' विषय पर एक विचार–गोष्ठी का भी आयोजन किया गया, इसमें कई शिक्षाविदों ने अपने विचार प्रस्तुत किये । इस अवसर पर नवयुग विद्यालयों के छात्रों ने कई रंगारंग कार्यक्रम भी प्रस्तुत कियें ।

परिषद् गतिविधियाँ

पालिका परिषद् की वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं का समापन और पुरस्कार वितरण

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के अध्यक्ष, श्री जलज श्रीवास्तव ने 27 फरवरी 2015 को पालिका परिषद् की वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों का वितरण न.दि.न.प. के कन्वेंशन सेंटर में किया ।

इस प्रतियोगिता में कुल 882 खिलाड़ियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे क्रिकेट, हॉकी, फुटबाल, वालीवाल, कबड्डी, टेबल टेनिस और बेडमिंटन में भाग लिया और इन खिलाड़ियों को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

इस अवसर पर पालिका परिषद के सदस्य, श्री बी.एस.भाटी, पालिका परिषद् के वरिष्ठ अधिकारीगण तथा न.दि.न.प. के कर्मचारी भी उपस्थित थे ।

परिषद् गतिविधियाँ

पुष्प–प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिता

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के सचिव, श्री निखिल कुमार ने 8 मार्च 2015 को नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् द्वारा नेहरू पार्क, चाणक्यपुरी में आयोजित चतुर्थ अंतर–विभागीय पुष्प–प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिता का उद्घाटन किया। इस वर्ष इस प्रदर्शनी का विषय'–''अनौपचारिक उद्यान भूदृश्यावली'' रखा गया है ।

पालिका परिषद् के उद्यान विभाग द्वारा पुष्प–प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिता का चौथी बार आयोजन किया गया है। इस प्रतियोगिता को 19 विभिन्न श्रेणियों में बांटा गया ।

इन सभी श्रेणी की प्रतियोगिताओं में एक ट्रॉफी और प्रत्येक प्रविष्टि के लिए कप प्रस्तावित किया गया था ।

पुरस्कार वितरण समारोह – नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के अध्यक्ष श्री जलज श्रीवास्तव ने पालिका परिषद् के नेहरू पार्क, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली में हुई दो दिवसीय चतुर्थ अंतर–विभागीय पुष्प प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिता के विजेताओं को 30 ट्राफी और 52 कप देकर 10 मार्च, 2015 को पुरस्कृत किया ।

इस प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिता में पालिका परिषद् – उद्यान विभाग के छह डिविजनों, दक्षिण दिल्ली नगर निगम, उत्तरी रेलवे, साउथ–ईस्ट डीडीए, नॉर्थ–वेस्ट डीडीए और साउथ दिल्ली नगर निगम ने भी भाग लिया ।

परिषद् गतिविधियाँ

रेसकोर्स झुग्गी–झोपड़ी क्षेत्र में विशेष स्वास्थ्य जाँच शिविर

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् द्वारा रेसकोर्स स्थित झुग्गी–झोपड़ी बस्ती में एक विशेष जाँच शिविर का आयोजन 14 मार्च, 2015 को किया गया । पालिका परिषद् के चिकित्सकों के एक दल द्वारा जॉच उपकरणों के साथ इस शिविर में झुग्गी–झोपड़ी बस्ती के 400 से अधिक नागरिकों की जॉच की गई। इस स्वास्थ्य जॉच शिविर के अन्तर्गत शिशु, बच्चों और 21 साल तक के वयस्कों के पोषण एवं स्वास्थ्य–स्तर की जॉच पर विशेष ध्यान दिया गया ।

इससे पूर्व नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् ने ऐसे सात जॉच शिविरों का आयोजन अपने क्षेत्र की झुग्गी–झोपड़ी क्षेत्र में किया था तथा इस अभियान के अन्तर्गत नई दिल्ली क्षेत्र की समस्त 28 झुग्गी–झोपड़ी बस्तियों में ऐसे कैम्प लगाने की योजना है ।

मलेरिया सुपरवाइजरों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के स्वास्थ्य विभाग द्वारा 14 मार्च, 2015 को मलेरिया यूनिट के सुपरवाइजर स्तरीय कर्मचारियों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम कन्वेंशन सेंटर में आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 300 से अधिक मलेरिया यूनिट के कर्मचारियों ने भाग लिया ।

इस अवसर पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अन्तर्गत राष्ट्रीय जलजनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम के डॉ सुखबीर सिंह, राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के डॉ हिम्मत सिंह और दिल्ली नगर निगम के डॉ एल.आर.वर्मा ने अपने विचारों से समस्त कर्मचारियों को मलेरिया के लक्षणों, बचाव के उपायों और निगरानी एवं उन्मूलन के बारे में भी बताया।

परिषद् गतिविधियाँ

मुख्य लेखापरीक्षा कार्यालय द्वारा 'कार्य–लेखापरीक्षा' पर सेमिनार

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के मुख्य लेखापरीक्षा कार्यालय द्वारा 26 एवं 27 फरवरी, 2015 को एक दो दिवसीय सेमिनार – 'कार्य–लेखापरीक्षा' विषय पर एन.डी.एम.सी. फेज–II भवन में आयोजित किया गया । इस सेमिनार की अध्यक्षता मुख्य लेखा परीक्षक श्रीमती वर्षा तिवारी ने की। सेमिनार का मुख्य उद्देश्य लेखा–परीक्षा की गुणवता को बढ़ाना था ।

इस सेमिनार में श्री जे.जे.आर्य, उप–मुख्य लेखा परीक्षक, श्री एस.सी. बिष्ट, उप–वित्तीय सलाहकार, श्री चन्द्र शेखर, उप–वित्तीय सलाहकार, श्री एन.के. तंवर, अधी. अभियंता, श्री नरेश वर्मा, अधी. अभियंता, श्री एच.सी. शर्मा, अधि. अभियंता, श्री संजय सिंघल, एस.डी.वी.– I, श्री एस.के. मुंजाल, व.ले.प.अधिकारी एवं श्री हरीश कुमार ए.ओ. ने विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये । सभी प्रशिक्षणार्थियों ने सेमिनार की सराहना करते हुए इस प्रकार के प्रयास को जारी रखने का आग्रह किया ।

परिषद् गतिविधियाँ

पालिका परिषद् सदस्यों ने शपथ ग्रहण की

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के अध्यक्ष श्री जलज श्रीवास्तव ने नई दिल्ली के विधायक एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री, श्री अरविंद केजरीवाल को 20 मार्च, 2015 को संविधान के प्रति विश्वास और कर्तव्यनिष्ठा की शपथ नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के सदस्य के रूप में दिलाई ।

शपथग्रहण करने के उपरान्त श्री अरविन्द केजरीवाल ने नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की और कहा कि नई दिल्ली नगरपालिका परिषद्, उसके अधिकारियों और कर्मचारियों को वे हर संभव सहयोग देंगे ।

शपथग्रहण करने के बाद श्री अरविंद केजरीवाल ने पालिका परिषद् बैठक की अध्यक्षता की और दिल्ली कैंट से विधायक, श्री सुरेन्द्र सिंह और दिल्ली सरकार के शिक्षा, प्रशिक्षण एवं तकनीकी शिक्षा विभाग की सचिव, सुश्री पुण्य सलीला श्रीवास्तव को भी संविधान के प्रति विश्वास और कर्तव्यनिष्ठा की शपथ नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के सदस्य के रूप में दिलाई ।

इस अवसर पर पालिका परिषद् अध्यक्ष, श्री जलज श्रीवास्तव ने दिल्ली के मुख्यमंत्री और अन्य सदस्यों को पालिका परिषद् की कार्यप्रणाली और विभिन्न गतिविधियों से विस्तारपूर्वक अवगत कराया ।

परिषद् गतिविधियाँ

झुग्गी–झोपड़ी में रहने वालों के लिए विशेष स्वास्थ्य जाँच शिविर

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् द्वारा 21 मार्च, 2015 को संजय कैम्प, चाणक्यपुरी स्थित झुग्गी–झोपड़ी बस्ती में एक विशेष स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया । इस जॉच शिविर में लगभग 500 से अधिक झुग्गी–बस्ती के नागरिकों ने अपनी जॉच करा कर इस शिविर का लाभ उठाया ।

इस स्वास्थ्य जॉच शिविर का उद्‌घाटन दिल्ली कैंट के विधायक एवं नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के सदस्य श्री सुरेंद्र सिंह ने किया । इस अवसर पर नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के सदस्य श्री अब्दुल रशीद अन्सारी एवं पालिका परिषद् के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थें ।

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के स्वास्थ्य सेवा विभाग से विभिन्न विशेषज्ञता के 15 डाक्टरों की एक टीम तथा 50 पैरामेडिकल स्टाफ को कैम्प में नियुक्त किया गया था । इनके अतिरिक्त डॉ. राममनोहर लोहिया अस्पताल नर्सिंग कॉलेज की प्रशिक्षु नर्सों ने भी इस स्वास्थ्य शिविर में भाग लेकर अपनी सहायक सेवाएं प्रदान की । इससे पूर्व नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् ऐसे आठ स्वास्थ्य जांच कैम्पों का आयोजन अपने क्षेत्र की झुग्गी–झोपड़ी बस्तियों में कर चुकी है ।

परिषद् गतिविधियाँ

दुर्गम–यात्रा कार्यक्रम

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के कल्याण विभाग द्वारा दुर्गम–यात्रा कार्यक्रम का आयोजन दिनाँक 13.12.2014 से 18.12.2014 तक किया गया, जिसमें न.दि.न. परिषद् के विभिन्न विभागों के 40 कर्मचारियों/अधिकारियों ने भाग लिया। दुर्गम यात्रा के अन्तर्गत न.दि.न.परिषद् में 40 कर्मचारियों/अधिकारियों ने पुष्कर, अजमेर, माऊंट आबू, उदयपुर, जयपुर आदि विभिन्न स्थानों के ऐतिहासिक स्मारकों की यात्रा की । दुर्गम–यात्रा कार्यक्रम के अन्तर्गत नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के कर्मचारियों/अधिकारियों ने इस यात्रा का भरपूर आनन्द लिया। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् का कल्याण विभाग समय–समय पर अपने कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करता रहता है।

प्रस्तुति : देव गोस्वामी

परिषद् गतिविधियाँ

इंजीनियर बी.एस. भटनागर, सहायक अभियंता (सिविल) सम्मानित

श्री बी. एस. भटनागर, नई दिल्ली नगर पालिका परिषद् में सहायक अभियंता (सिविल) के पद पर कार्यरत हैं। इन्हें नई दिल्ली नगर पालिका परिषद् द्वारा 2011 की भारतीय जनगणना करने का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया, जिसे इन्होंने ने कड़ी मेहनत से समयबद्ध तरीके से पूर्ण कराया। इंजी. बी. एस. भटनागर को भारत कि जनगणना 2011 के दौरान असाधारण उत्साह और उच्च–कोटि की सेवाओं के उपलक्ष्य में **"जनगणना रजत पदक और राष्ट्रपति सम्मान पत्र"** से सम्मानित किया गया। यह सम्मान इन्हें त्यागराज स्टेडियम में 09.12.2014 को माननीया जनगणना निदेशक श्रीमती वर्षा जोशी (आई.ए.एस.) के द्वारा **"पदक वितरण समारोह"** में प्रदान किया गया।

नई दिल्ली नगर पालिका परिषद् की ओर से ऐसे कर्मठ अधिकारी, इंजी. बी. एस. भटनागर को शुभकामनाएं।

बजट समाचार

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् बजट 2015-16

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के अध्यक्ष, श्री जलज श्रीवास्तव ने 25 मार्च, 2015 को पालिका परिषद् की बैठक में वर्ष 2015–16 का बजट प्रस्तुत किया । बजट पेश करने के बाद पत्रकार सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि नई दिल्ली को विश्वस्तरीय 'स्मार्ट–सिटी' बनाने का साझा स्वप्न केवल सूक्ष्म योजना और सभी प्रभावित होने वाले वर्गों की भागीदारी से ही साकार किया जा सकता है।

श्री जलज श्रीवास्तव ने पालिका परिषद् का वर्ष 2015–16 के लिए ₹ 27.20 करोड़ के मुनाफे का बजट प्रस्तुत किया है। इस आगामी वित्तीय वर्ष 2015–16 के लिए कुल ₹ 3153.22 करोड़ की प्राप्ति के अनुमान की तुलना में कुल ₹ 3126.02 करोड़ के अनुमानित व्यय का लक्ष्य रखा गया है। पालिका परिषद् लगभग 94 प्रतिशत राजस्व अपने आन्तरिक स्रोतों से ही प्राप्त करती है, जिनमे 42 प्रतिशत शुल्क और उपयोगकर्ता शुल्क से, 14 प्रतिशत पालिका की सम्पतियों के लाइसेंस शुल्क से, 13 प्रतिशत सम्पत्ति कर एवं विद्युत शुल्क से और 15 ब्याज से है। **वित्तीय वर्ष 2015–16 के लिए संम्पत्ति कर में कोई वृद्धि प्रस्तावित नहीं की गई है।**

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् बजट 2015–16 के विशेष बिन्दु

संशोधित अनुमान वर्ष 2014–15 में ₹ 2670.93 करोड़ की तुलना में बजट अनुमान ₹ 2835.72 करोड़ के **राजस्व प्राप्ति** से 6.17 प्रतिशत की वृद्धि की है ।

- संशोधित अनुमान वर्ष 2014–15 में ₹ 2665.14 करोड़ की तुलना में ₹ 2820.57 करोड़ की **राजस्व व्यय** में 5.83 प्रतिशत वृद्धि हुई है।
- संशोधित अनुमान 2014–15 के ₹ 2670.93 करोड़ की तुलना में ₹ 305.45 करोड़ का **पूंजीगत व्यय** 16.26 प्रतिशत वृद्धि के साथ हुआ है ।
- **बाह्य स्रोतों से कुल राजस्व प्राप्ति** केवल 6 प्रतिशत (रूपए 178.31 करोड़) ।
- **लाइसेंस शुल्क प्राप्ति** वर्ष 2013–14 के वास्तविक से 50 प्रतिशत अधिक और संशोधित अनुमान 2014–15 से 10 प्रतिशत अधिक ₹ 430.95 करोड़ ।
- **अनुमानित परिव्ययः** सड़क एवं फुटपाथ पर ₹ 125.40 करोड़, विद्युत वितरण पर ₹ 1302.12 करोड़, जलापूर्ति पर ₹ 129.22 करोड़, पार्क एवं उद्यानों पर ₹ 86.63 करोड़, ठोस कूड़ा प्रबंधन एवं स्वच्छता पर ₹ 123.39 करोड़, चिकित्सा सेवाओं एवं जनस्वास्थ्य पर 83.05 करोड़, शिक्षा पर ₹ 150.37 करोड़ एवं पालिका परिषद् मार्किटों पर ₹ 79.92 करोड़ ।

वर्ष 2015–16 के बजट में जिन नई परियोजनाओं और प्रयासों की घोषणा की गई हैं, वे इस प्रकार है –

स्मार्ट पोल्स : पालिका परिषद् ने अपने क्षेत्र में स्थापित 18500 बिजली के खम्भों को प्रयोग

करके या उन्हें बदलकर उनके स्थान पर एलईडी, सीसीटीवी युक्त खंभों को लगाने का निर्णय लिया है। इनके माध्यम से वाई–फाई/2जी/3जी/4जी आधारित विविध अगली पीढ़ी की डिजिटल सेवाएं उपलब्ध कराई जायेंगी । इन पर पालिका परिषद् को अपनी ओर से कोई अतिरिक्त खर्चा नहीं करना होगा, यह प्रयास राजस्व–भागीदारी के मॉडल पर आधारित होगा ।

सोलर सिटी प्रोजेक्टः पालिका परिषद् ने अपने स्कूलों/कार्यालयों की छतों पर 4 मेगावॉट की सौर–ऊर्जा आरंभिक स्तर पर खुली निविदा आधार पर उत्पादित करने का एक मास्टर प्लान बनाया है ।

कचरे से ऊर्जा उत्पादन : पालिका परिषद् क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर कचरे से बिजली बनाने के लिए ऐसे संयंत्रों की एक श्रृंखला स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है, जिसके अन्तर्गत क्षेत्र के 100 प्रतिशत कचरे को पर्यावरण अनुकूल तरीके से उपलब्ध **प्रौद्योगिकियों** के माध्यम से रिसाइकिल करके अधिकतम बिजली या गैस बनाई जाये ।

'ऊर्जा' परियोजना : इस परियोजना का उददेश्य महिलाओं में निहित और अप्रयुक्त कौशल को उनकी उद्यमशीलता में विकसित करने का प्रयास है । महिलाओं को 'संरक्षित होने के बजाय रक्षक बनाने ' और उनको प्रचलित भेदभाव की चुनौतियों का मुकाबले करने में सक्षम बनाना, इस योजना का उददेश्य है ।

शक्ति कैबः सेवा महिला यात्रियों को सुरक्षित सुविधाएं उपलब्ध कराने को समर्पित है। एक पायलट प्रोजेक्ट के अन्तर्गत पालिका परिषद् के महिला तकनीकी संस्थान (डब्लूटीआई) ने महिलाओं को व्यावसायिक ड्राइवरों के रूप में कौशल–सम्पन्न किया है ।ये जीपीएस युक्त कैब चलाएगी और रात को इनमें एक सुरक्षा गार्ड भी होगा ।

फुटबाल अकादमी नगरपालिका माध्यामिक विद्यालय–मंदिर मार्ग के पीछे 'डिजाइन, विकास, संचालन तथा प्रबंधन' आधार पर शेर मैदान पर 3जी कृत्रिम घास सहित एक फीफा–स्तर की फुटबाल अकादमी की स्थापना की जा रही है ।

पॉच प्रौद्योगिकी सक्षम कक्षाओं की स्थापना करने के लिए एक पायलट परियोजना बनाई गई है ।

रोजगारोन्मुखी कौशल विकास के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) की तर्ज पर लड़कों के लिए एक तकनीकी संस्थान की स्थापना का प्रस्ताव भी है ।

कौशल विकास केन्द्र : इसकी स्थापना का उददेश्य लोगों को कई प्रकार से कौशल–सम्पन्न करके आत्मनिर्भर और विभिन्न रोजगारों के योग्य बनाना है । फूलों के गुलदस्तें और सजावट, खाद्य–संरक्षण, चॉकलेट बनाने आदि का घरेलू प्रशिक्षण मालियों और टीएमआर/आरएमआर कर्मचारियों को दिया जायेगा । पलिका परिषद् के महिला तकनीकी संस्थान में 'सिलाई एवं फैशन डिजाइनिंग', केटरिंग, ड्राइविंग, ब्यूटिश्यिन, कम्पयुटर एप्लीकेशन एवं घरेलू प्रबंधन के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पहले से ही चलाए जा रहे है ।

प्रशासन में क्षमता संवर्धन के लिए नवीनतम **प्रौद्योगिकियों** का लाभ उठाया जायेगा।

भारतीय महिलायें

— **के. आर. पांडे**

शास्त्रों में यद्यपि लिखा है कि – **यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमते तत्र देवता अर्थात्** जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि शास्त्रों के ये शब्द किन नारियों के बारे में लिखे गये होंगे। आज तो समाचार–पत्रों में दिन–प्रतिदिन महिलाओं पर अत्याचार, बलात्कार एवं यौन–उत्पीड़न जैसी घटनाओं का जिक्र आम बात हो गई है। प्रातः जब अखबार में प्रथम नजर पड़ती हैं तो इस तरह की खबरें मुख्य समाचार के रूप में अथवा सम्पादकीय एवं लेखों में इनका उल्लेख अधिकतर पढ़ने को मिलता हैं। बल्कि मैं तो यह कहूंगा कि महिलाओं पर अत्याचार उसके पैदा होने से पहले ही शुरू हो जाते हैं। गर्भ में लिंग भ्रूण परीक्षण इसका एक शर्मनाक उदाहरण है। अगर मां के गर्भ में कन्या जन्म ले रही है तो उसको जन्म से पहले ही समाप्त कर दिया जाता है या फिर शादी के बाद दहेज हत्या के नाम पर उसको जिन्दा जला देना आम बात है। कन्या भ्रूण हत्या अथवा दहेज हत्या के विरुद्ध यद्यपि कई साल पहले से कानून बने हुए है, परन्तु वह नगण्य से है। उनका अभी तक कोई खास असर दिखाई नहीं पड़ रहा है। समाज में आज भी कानून की परवाह किये बिना महिलाओं पर अत्याचार का सिलसिला जारी है।

सुना है राजस्थान में कुछ इलाके ऐसे है, जहां कन्या के पैदा होने पर जहरीले पत्ते का रस मुंह में डाल कर नवजात कन्या को पैदा होते ही समाप्त कर दिया जाता है। आज भी लड़कियों को लड़कों के मुकाबले दोयम दर्जा दिया जाता है। सम्पन्न घरों में भी पुत्र के पैदा होने पर जहां खुशी का माहौल होता है वहीं पुत्री के पैदा होते ही मातम छा जाता है। एक सर्वेक्षण के अनुसार सन् 1991 में जहां महिला एवं पुरुष का अनुपात एक हजार पर 915 था वहीं आज घटकर 865 हो गया है। कुछ राज्यों में तो यह आंकड़ा इससे भी नीचे पहुंच गया है। जहां पंजाब एवं हरियाणा जैसे खुशहाल राज्यों में यह 793 है, वहीं देश की राजधानी दिल्ली में यह 845 पर टिका हुआ है, जो देश के लिए यह घातक है। आज भारत की आबादी 1.27 अरब तक पहुंच गई है। विश्व में चीन के बाद भारत की आबादी सबसे ज्यादा है वहीं लड़कियों का आबादी का अनुपात दिन–प्रतिदिन गिरना चिन्ता का विषय है।

कभी–कभी कुछ ऐसे दर्दनाक समाचार देखने को मिलते हैं जिन्हें पढ़कर सिर शर्म से झुक जाता है। एक गांव में कुछ महिलाओं से पूछा गया कि लड़कियों को स्कूल क्यों नहीं भेजते तो उनका जवाब था – हमारे बच्चों के कपड़े फटे होते हैं और अध्यापक उनको बुरी निगाहों से देखते हैं। जब बाढ़ ही खेत को खा जाय तो उसका रखवाला कौन हो सकता है?

आजादी के बाद महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए जहां कई कानून बनाये गये वहीं 1990 में संसद् में एक विधेयक पास कर सर्वोच्य संवैधानिक निकाय राष्ट्रीय महिला आयोग का गठन किया गया। देश में पहली बार महिलाओं के हितों की रक्षा के लिए एक ऐसा उच्च शक्तिशाली निकाय काम करने लगा जिसको अपराध की छानबीन के सिलसिले में गवाहों को समन करने एवं संबंधित दस्तावेज को मंगा सकने का अधिकार भी प्राप्त है। 1992 से यह संस्था प्रभावी रूप में कार्य तो कर रही है परंतु आम नागरिकों को इसका लाभ मिल पा रहा है इसको मैं नहीं मानता। इस कानून से आम महिलाएं आज भी अनभिज्ञ हैं।

भारतीय संसद के उच्च सदन में आज महिलाओं का प्रतिशत सीटें आरक्षित करने के लिए कानून बनाने के लिए संसद् में बहस चल रही है। राज्यसभा ने 9 मार्च, 1910 को यह आरक्षण बिल पास कर लोकसभा में भेज दिया था। तब से वह वहीं लटका हुआ है। पन्द्रहवीं लोकसभा तो उसको पास नहीं कर पाई। देखते हैं सोलहवीं लोकसभा इसे पास करवाने में कितनी तत्परता दिखाती है।

भारतीय महिलाओं को मैं अन्य देशों की महिलाओं की अपेक्षा भाग्यशाली मानता हूँ, जिनको स्वतंत्रता प्राप्ति से बहुत पहले सन् 1930 में मताधिकार का अधिकार हासिल हो गया था। जब कि अमरीका एवं ब्रिटेन जैसे देशों की महिलाओं को कई दशकों के संघर्ष के बाद यह अधिकार प्राप्त हुआ। आज लोकसभा की अध्यक्षा श्रीमती मीरा कुमार हैं, विरोधी दल की नेता का पद श्रीमती सुषमा स्वराज संभाल रही हैं, यूपीए की अध्यक्ष पद पर श्रीमती सोनिया गांधी विराजमान हैं। इससे पहले राज्यसभा में श्रीमती अल्वा, श्रीमती प्रतीभा पाटिल (पूर्व राष्ट्रपति) एवं डा० नजमा हेपतुल्ला उप–सभापति का पद सुशोभित कर चुकी हैं। यद्यपि भारत में राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री जैसे उच्च पदों तक को महिलायें सुशोभित कर चुकी है, परन्तु रक्षा, गृह, विदेश या वित्त जैसे महत्वपूर्ण विभागों में आज तक किसी महिला को शामिल नहीं किया गया जब कि आजादी की लड़ाई एवं आजादी के बाद भारतीय महिलाओं ने पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम किया है। आजादी के बाद अब तक चौदह प्रान्तों में महिलायें मुख्यमंत्री का पद संभाल चुकी हैं अथवा संभाल रही हैं।

97, कूर्मांचल निकेतन,
115, पटपड़गंज, दिल्ली–110092

हाँ, मैं बोल रहा हूँ

– ए. के बहुगुणा

मेरे जंगल को हरा–भरा रहने दो
मेरे झरनों को अविरल बहने दो
मैं चला जा रहा हूँ बहती हुई नदियों में
मुझे नदी की धारा में बहने दो,
न रोको मुझे, कुछ पाकर भी सब कुछ खो दोगे
मैं सुनसान हूँ, मुझे शोर में डुबोने मत दो
मुझे एकांत में रहने दो
मेरे जंगल को हरा–भरा रहने दो.....
हर चीज को विज्ञान से मत जोड़ो
कुछ तो मुझसे रहने दो
जिद करके मुझे खुद से जोड़ोगे तो,
फिर खुद को विनाश होने दो
सर्वत्र हूँ मैं सदा से, मुझे सर्वव्याप होने दो
मुझे रोक न सका मैं भी,
हाँ मैं खुदा हूँ, भगवान हूँ
इंसानों इंसानियत में जियो, हैवानियत को छोड़ दो
प्रकृति तुम्हारा रूप है, मेरा स्वरूप है,
इसे और संवारो, इसका श्रृंगार करो
इसके प्राकृतिक सौंदर्य को मत बिगाड़ो,
आज आपका है, कल भी अपना बना के रखो
मुझसे प्यार करो खिलवाड़ मत करो,
मेरा बिगड़ने में मेरा दोष नहीं होता
तुम्हारा बिगड़ने से तुम लोगों में रोष क्यों होता
संतुलित जीवन के लिए फिर मुझे जागना पड़ता है
देवलोक से मुझे मनुष्यलोक में आना पड़ता है।
अपने घर को, और आस–पास सफाई रखते हो
फिर मेरे स्थान के आस–पास गंदगी क्यों रखते हो।
मैं भी सफाई रखता हूँ, मुझे भी साफ रखने दो
मैं भोला हूँ, मुझे भोला ही रहने दो,
जीयो और जीने दो।
जीयो और जीने दो।।

विद्युत सब–स्टेशन 33/11, के०वी० रेसकोर्स, न०दि०न०प०, नई दिल्ली–1

(1)

नज़र

— नितिन नारंग 'समर'

पथराई–सी नज़र;
पलक नहीं झपकती,
आँख नहीं पिघलती।
कहाँ और क्या देखें?

(2)

कहानी

वही शुरूआत,
किरदार वही,
वही वाकेआत,
अंजाम वही!
कहानी दोहराई जाएगी कितनी बार?

(3)

ज़ेहन

कागज़ों की नीली हरी चमक में
खोखला लिहाज़ ओढ़े सिहरना,
कुढ़–कुढ़ कर घुट जाना,
कचोट रहा है!
ज़ेहन बिना जीया
क्यों नहीं जाता?

(4)

चाहत

बधाईयों और तारीफ़ों के बावजूद
सच है कि मैं हारा हूँ,
तरस या हमदर्दी मत जताना
बस इज़हार करना चाहता हूँ।

362, एस.एफ.एस.फ्लैट्स,
अशोक विहार, फ़ेज–4,
दिल्ली–110052

"मेरे पिता को चाहिए" टेसू के फूल

— ओम उपाध्याय

सूती अंगरखा
मोटी धोती
सत्तर फागुनों का अनुभव
कस्बा होता उनका देहात
अब है उनके
हाथ पर हाथ।
न चौपाल, न चंग
ना ढपली, ना राग
कैसा फागुन! कैसा फाग!
कढ़ाई!
जिसमें टेसू उबलता था
जिससे सारा
गांव रंगता था।
पहले उसे जंग लगी
फिर सयाने
मिल बाँट खा गए।
गांव उजला क्या गया
वे चौंधिया गए,
लोग सूखी नदी के
पत्थर हो गए।
कुछ और भी है
मेरे पिता के समान्तर
वे भी फरमाइशें करते है
मेरे पिता की तरह,
कोई अन्य फरमाईश
और वो भी नकारी जाती है
अवहेलित होती है
टेसू के फूलों की तरह।

बंगला नंबर–11, समृद्धि परिसर,
राजहर्ष कॉलोनी, ललिता नगर,
कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.)–462042

.... और भाग्यशाली बन जाओ'

– **हेमलता**

साधारण तौर पर अपने जीवन में किसी ऊँचे मुकाम पर पहुँचे व्यक्ति को भाग्यशाली मान लिया जाता है; जबकि गुमनाम–सी जिंदगी जीने वाले को अभागा माना जाता है। यदि भाग्यशाली और अभागे लोगों की जीवनशैली का सूक्ष्म अध्ययन किया जाए तो कई बातें सामने आती है जिनके कारण कुछ लोग भाग्यशाली बन बैठे हैं। शीर्ष पर पहुँचे लोगों में यह देखा गया है कि वे अत्यधिक मिलनसार होते हैं। उन्हें किसी से मिलने–जुलने से परहेज नहीं होता। साथ घुल–मिल जाना, हंसी–खुशी में शामिल हो जाना, स्वागत संत्कार करना, उनका सहज गुण होता है। पेन्सिलवानिया विश्वविद्यालय के मनोचिकित्सक डा. स्टीफन बारट की स्पष्ट धारणा है कि भाग्यशाली लोग खुद तो दोस्त बनाते ही हैं, साथ ही वे ऐसे हाव–भाव प्रदर्शित करते हैं, जिनके कारण लोग स्वयं उनसे दोस्ती करने चले आते हैं। जिस व्यक्ति का दोस्ती दायरा जितना बड़ा होगा; उसके पास जीवन में आगे बढ़ने के उतने अधिक अवसर होंगे।

प्रत्येक व्यक्ति के मन में अंतः प्रेरणाएं आती हैं। ये बेवजह नहीं होती। इन अंतः प्रेरणाओं का जीवन में बेहद महत्व होता है। ये प्रेरणाएं जीवन के उन अनुभवों के आधार पर बनती हैं जिन्हें व्यक्ति भुला देता है। उन्हीं तथ्यों के आधार पर अवचेतन मन अपनी धारणाएं कायम करता है। इन तथ्यों पर व्यक्ति का ध्यान सामान्यतया नहीं जाता । विश्व के होटल व्यवसाय थान राड हिल्टन का नाम जाना पहचाना है। उनकी सफलताओं का श्रेय उनकी अंतः प्रेरणाओं को दिया जा सकता है। एक बार वह शिकागो में एक होटल खरीदने वाले थे हिल्टन ने अपने प्रस्ताव में होटल का दाम 16500 डालर लगाया; लेकिन इसके बाद उन्हें बार बार यह लगता रहा कि कहीं कोई गलती कर दी है। इसकी वजह से वह रात में ठीक से सो नहीं सके। उन्हें बार–बार यह लगता रहा कि होटल उन्हें नहीं मिलेगा। अपनी अंतः प्रेरणा के भरोसे अगले दिन दूसरा प्रस्ताव भेजा इसमें उन्होंने होटल का मूल्य 1800 डालर लगाया था। निश्चित तिथि को सभी प्रस्ताव खोले गए। होटल हिल्टन को मिल गया; क्योंकि उनका प्रस्ताव सबसे अधिक डालर का था। दूसरे नंबर का प्रस्ताव 17900 डालर का था। केवल 100 डालर ज्यादा होने के कारण भाग्य हिल्टन के साथ था।

इस घटना का कोई मनोवैज्ञानिक विश्लेषण नहीं किया जा सकता; लेकिन यह विचार ऐसे ही आ गया; वैसा भी नहीं है। वास्तव में मन की परतों में कहीं अनुभव अपना काम रहता रहा था। अपनी युवावस्था में जब उन्होंने अपना पहला होटल टैक्सास में खोला था; उनका तब से होटल संबंधी ज्ञान लगातार बढ़ रहा था। यही वजह थी कि शिकागो के होटल का दाम लगाते हुए उन्हें अवचेतन में अपने प्रतिद्वंद्वियों का ध्यान रहा होगा। दिमाग में संवेदनशील तंतु लगातार अपना काम कर रहे होंगे। यह सब अवचेतन क्षेत्र में हो रहा होगा। अवचेतन क्षेत्र ने चेतन क्षेत्र, दिमाग, को सावधान किया। हिल्टन ने इस चेतावनी का लाभ उठाया और सही निर्णय का लाभ उन्हें मिला। साहसी होना भाग्यशाली होने की शुरूआत है। यदि कोई सुअवसर आ रहा हो तो इसका लाभ उठाने में झिझकना नहीं चाहिए; बल्कि तमाम जोखिमों के साथ इसे स्वीकार करना चाहिए। भारतीय मूल के ब्रिटिश नागरिक स्वराज पाल ने 50 हजार पाउंड का कर्ज लेकर व्यवसाय शुरू किया था। भारत के सर्वाधिक धनी व्यक्ति मुकेश अंबानी के पिता धीरूभाई अंबानी की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। सूचना प्रौद्योगिकी के दिग्गज नारायण मूर्ति; प्रेमजी अजीमजी और शिव नाडार तथा दूरसंचार के सुनील भारती मित्तल इसी प्रकार की हस्ती है। जाहिर है कि इन लोगों ने कुछ साहसिक कदम उठाए और भाग्यशाली होने का गौरव पाया।

अपनी भूल स्वीकार कर लेना बड़ा मुश्किल काम होता है। उस प्रयत्न को छोड़ने में तकलीफ होती है; जिसमें पैसा, श्रम और समय आदि लगा है। शेयर बाजार के धंधे में प्रखर और भाग्यशाली माने जाने वाले जेरावड लोगों का कहना है कि यह जान लेना कि 'कब क्या बेच देना और कब क्या खरीद लेना है; सफलता की आवश्यक शर्तों में से एक है। समस्या से जूझने के लिए भाग्यशाली लोग हमेशा तैयार रहते है। करोड़पति व्यापारी पाल गैरी का कहना है कि 'मैं जब भी कोई सौदा करता हूँ तो सबसे मेरा ध्यान इस ओर सबसे पहले जाता है कि अगर सौदा बिगड़ गया तो बचाव का रास्ता क्या होगा। कुछ लोग इस सोच को निराशावादी कह सकते है; लेकिन कहा जाता है कि यदि कोई चीज बिगड़ सकती है तो मान लेना चाहिए कि यह अवश्य ही बिगड़ेगी। यदि ऐसा मानकर काम किया जाए तो काम बिगड़ने पर भी उसका सामना किया जा सकता है।'

इसके अलावा कड़ी मेहनत, धैर्य और सही समय का चुनाव भाग्यशाली बना सकता है। भाग्यशाली बनने के लिए भाग्य के भरोसे नहीं बैठा जा सकता। इसके लिए ये सूत्र मानने ही होगे। फिर कोई भी किसी को भी भाग्यशाली होने से नहीं रोक सकता। आपको भी नहीं।

81–82, ए. एंड बी. एक्सटेंशन
सुलतान पुरी, दिल्ली–110086

गाय की महिमा

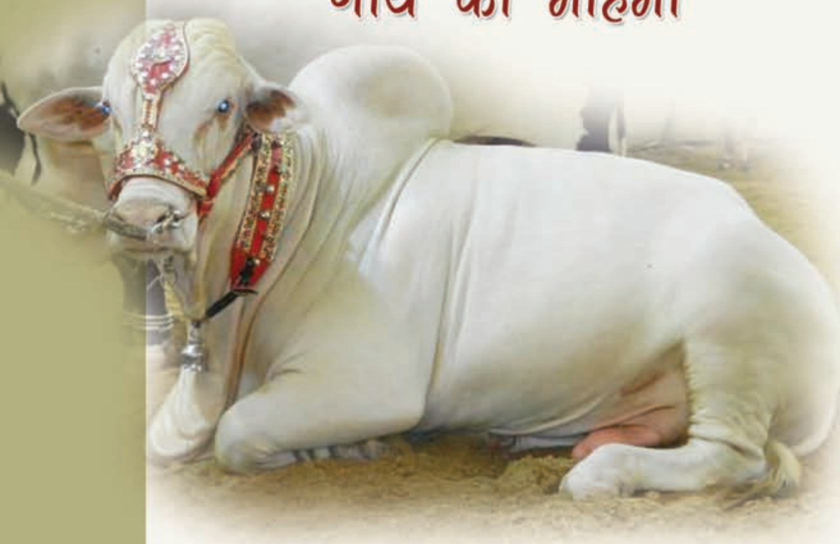

– डॉ० राम सिंह

भारत में गाय का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन काल से ही गाय की पूजा की जाती रही है। गाय का दूध माँ के दूध जैसा होता है। केवल दूध ही नहीं, गाय का घी भी स्वास्थ्यवर्धक होता है। इसमें अनेक औषधीय तत्त्व विद्यमान रहते हैं। गाय का गोबर और मूत्र भी बहुत उपयोगी एवं गुणकारी है। गाय का गोबर रोगाणुनाशक, औषधीय गुणसम्पन्न है। गाय का गोबर ईंधन, जैविक गैस और परमाणु गैसों का प्रभाव रोकने के लिए भी प्रयोग किया जाता है। गाय का मूत्र धार्मिक अनुष्ठानों में काम आता है, इसका औषधीय महत्त्व भी बहुत अधिक रहा है। यह रोगाणुनाशक तथा कीट नियंत्रक है। सभी जीवित प्राणियों के मूत्रों में गोमूत्र सबसे अधिक श्रेष्ठ है। गोमूत्र से अजीर्ण, अफारा, मधुमेह, कब्ज, दन्तरोग, नेत्ररोग, अनिद्रा, वातरोग, हृदयरोग, उदररोग, लू श्वासरोग आदि रोगों को दूर किया जा सकता है। गोमूत्र निर्मल एवं मलशोधक माना गया है। गोमूत्र जितना अधिक पुराना होता है वह उतना ही गुणकारी माना गया है। गाय के ताजा गोबर से तपेदिक तथा मलेरिया के रोगाणु मर जाते हैं। प्राचीन ग्रंथों में यह उल्लेख मिलता है कि गाय में लक्ष्मी का निवास है। गोमाता को सर्वदेवमयी के रूप में प्रतिष्ठित कर उसे परिवार के सदस्य के रूप में मानने की प्राचीन परम्परा चलती आई है। सभी प्राचीन ग्रन्थों, वेदादि शास्त्रों, भविष्यपुराण, महाभारत आदि में गाय के सम्मान एवं पूजा का उल्लेख मिलता है। गाय के शरीर के विभिन्न अंगों में भिन्न–भिन्न देवी–देवताओं का वास रहता है। प्राचीन काल में भी ऋषि एवं संत–महात्मा गाय को पालते थे तथा उनकी पूजा–अर्चना किया करते थे। महर्षि वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य आदि की गो–सेवा प्रसिद्ध रही है। इसी प्रकार संत–जाम्बोजी, तेजाजी आदि का नाम गोमाता संरक्षण संदर्भ में बड़े सम्मान के साथ लिया जाता रहा है। धार्मिक ग्रंथों में निरूपित है कि प्रातः गायों को चराने के लिए चारागाहों में लेकर जाया जाता था और संध्याकाल के समय वापिस घर में उन्हें लाया जाता था। श्री कृष्ण भगवान की बाललीलाओं में उनके द्वारा गायों को सुबह चराने के लिए लेकर जाना तथा शाम को वापिस लौटा कर लाने का सूरदास ने मनोहारी वर्णन अपने भावों में व्यक्त किया है। गोमाता के प्रति श्री कृष्ण भगवान के प्रेमभाव के कारण ही उनका नाम गोपाल तथा गोविन्द प्रसिद्ध हो गया। बोद्धकाल में भी गोमाता का विशेष रूप से ध्यान रखा जाता था। बूढ़ी अपाहिज गायों को विशेष स्थान पर रखने की प्रथा रही थी। जैन मत के अनुसार भगवान ऋषभदेव ने गोवंश, पशुओं के पालन–पोषण तथा उनकी उपयोगिता संदर्भ में शिक्षा देने की अनुशंसा की है। भारतीय समाज ने गाय को माँ की संज्ञा दी है। भारत की संस्कृति मूलतः गो संस्कृति है। गोमाता जिस स्थान पर रहती है, वहाँ वास्तुदोष नहीं रहता। इस प्रकार की मान्यता आज भी जन–जन के बीच विद्यमान रही हैं गाय की अतिविशिष्ट महिमा को ध्यान में रखते हुए जन–जन का यह कर्तव्य बनता है कि वे व्यवहारिक स्तर पर गोवंश की उपयोगिता को ध्यानगत करे केवल दूध लेने मात्रा तक ही गायों से संबंध नहीं रखे बल्कि उनकी सुरक्षा एवं संवर्धन के लिए भी आगे आयें।

नारनौल, हरियाणा–123001

मन ही मन्दिर

– मन मोहन गुप्ता

यूँ तो हमारा मन ही मन्दिर होना चाहिए क्योंकि मन्दिर तो मन की उस भाव दशा का नाम है जो परमात्मा एवं समस्त जीवमात्र के प्रति करूणा, प्रेम, आत्मीयता से भरी होती है। ऐसी अवस्था में हमारे शरीर का इन्द्रियों से नियन्त्रण कम हो जाता है और हम विचारहीन अवस्था में पहुँच जाते है। चिन्तामुक्त होकर तरोताजा एवं फुर्तीला महसूस करते है। इस दशा को प्राप्त करने के लिए मन को ध्यानावस्था में लाकर एकाग्र एवं स्थिर करना आवश्यक माना गया है परन्तु ये कार्य इतना सरल नहीं है। अच्छे अच्छे लोग इस स्थिति को अधिक देर तक नहीं कर पाते हैं। शायद मन को इसी स्थिति में परिवर्तित करने के लिए ही बाह्य मन्दिरों का निर्माण किया गया क्योंकि आवास तो पशु पक्षी भी बनाते हैं परन्तु मन्दिर का निर्माण तो केवल मनुष्य ही करता है।

मनुष्य ने भी अपने निवास की तरह अपनी ही आकृति के अनुरूप अनेक देवी देवताओं के घर बनाए ताकि वहाँ घड़ी दो घड़ी जा कर मन को एकाग्र कर सके। अभ्यास कर सके अपने मन को उपरोक्त भाव दशा में लाने का। सामाजिक परिवेश में उन्हे अलग अलग नामों से पुकारा गया चाहे वे प्रार्थना स्थल हों, मन्दिर हों, मस्जिद हों, गिरिजाघर हो, गुरूद्वारे हों अथवा बुद्ध विहार। सबकी उपासना का अपना अपना ढंग है, अलग अलग भाषाएँ और अलग अलग सम्बोधन। परन्तु सबका मतलब एक ही है। ये बाह्य मन्दिर रेडियो स्टेशन का कार्य करते हैं बशर्ते हम इनके महत्व और उददेश्य को समझें। जिस प्रकार ईश्वर सभी जीव प्राणियों में विद्यमान है।

आज हम इन बाह्य मन्दिरों को ही अंतिम मंजिल मान बैठे है। हमारी दृष्टि बाह्य दिखावे पर टिकी है। धर्म के भेद, जाँति–पाँति, प्रतिष्ठा और स्वार्थपरता आदि ने इन बाह्य मन्दिरों के उद्देश्य को धूमिल कर दिया हैं जबकि इन बाह्य मन्दिरों से कितना अधिक शान्ति सुन्दरता हमारे मन के अन्दर छिपी हुई है आवश्यकता है कि हम इनसे प्रेरणा लेकर इनके अनुरूप अपने मन को सुन्दर विचारो से ओत प्रोत करें। मनुष्य के शरीर पर प्रकृति के नियमों का उतना प्रभाव नहीं पड़ता जितना उसके चिन्तन मनन विचार और भावना का पड़ता है। जैसे खटाई के चिन्तन मात्र से मुँह में पानी भर आता है। एकयुवा पुरूष सुन्दर

युवती का चिन्तन करते ही शरीर और मन को विचित्र स्थिति में परिवर्तित कर लेता है। विवाह के समय होने वाली पत्नि की एक झलक भी पति को विचलित कर देती है जबकि एक बेटी द्वारा विदाई के समय अपने पिता से बेसुधि अवस्था में उसके लिपट कर रोने पर भी पिता के मन में करूणा प्रेम विरह के स्त्रोत फूट पड़ते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में हृदय में अपने हितेषी सम्बन्धी के मिलन की आशा जहाँ हृदय में प्रफुल्लता का संचार करती है वहीं किसी दुष्ट अथवा शत्रु के मिलन की खबर रक्त संचार ही अवरूद्ध कर देती है। किसी भय का स्मरण होने से उसका शरीर पीला पड़ जाता है। रोगी को वैद्य द्वारा स्वस्थ होने का आवश्वासन मिलने पर प्रसन्नता की अद्‌भुत अनुभूति होती है। ये अनुभूति ही उसे स्वस्थ होने का कारण बनती है।

हम इन मन्दिरो का सहारा लेकर उस निराकार, निरोग आन्नदमय परमात्मा के चिन्तन में डूबते हैं तो हमें असीम आनन्द एवं सुख की अनुभूति होती है। ये कार्य बिना मन्दिरों के भी कर सकते हैं परन्तु ये मन्दिर हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं। इन मन्दिरों में व्याप्त शांति सुख और आनन्द का अनुभव जब हम अपने अन्दर अर्थात् मन में करने का प्रयास करते है तो हमें आत्मिक बल प्राप्त होता है जो शारीरिक बल अथवा भौतिक शक्तियों से कहीं अधिक प्रभावशाली है। भगवान शंकर जी ने इसी आत्मस्वरूप का चिन्तन करके कालकूट जैसे विष को पचा लिया था। अगस्त ऋषि ने समुद्र को अपनी अंजलि में पीकर सोख लिया था। मीराबाई ने विष पान किया। भीम को भी विष पान कराया गया। होलिका अग्नि में भी नहीं जली आदि आदि घटनाएँ हमें उसी शक्ति की ओर इशारा करती है। हम भी अपने मन को केन्द्रित करके उच्च विचार जाग्रत करें तो स्वस्थ, निरोगी काया के साथ एक उन्नत शील प्राणी बनने का प्रयास कर सकते हैं। यदि हम अपने मन को बाह्य मन्दिरों की भाँति सुन्दर बनाने में कामयाब हुए तो हमारा जीवन स्वतः ही सुन्दर बन जायेगा।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/कन्सलटैंट
कार्यालयः मुख्य लेखा परीक्षक,
न.दि.न.परिषद्

इस बार फिर

– जसविंदर शर्मा

ऐसा करो
अपने बुरे वक्त पर
खिन्न होने से पहले
खुद को
बस एक मौका और दो
मगर शायद ही
यह अवसर भी चूक जाये
और न चूका भी तो
तुम्हारा ऐसा करना
तुम्हारे अन्दर के भरोसे को
मरने नहीं देगा
और यही भरोसा
तुम्हें इस बार फिर
खाली लौटने नहीं देगा
भर देगा तुम्हारा दामन
अनुभवों से
और अनुभव ही तो जीवन है.......

5/2 डी., रेल विहार,
मनसा देवी पंचकुला–134109 (हरियाणा)

अतीत का सच

– अनिल कुमार शुक्ला

दुनिया है सपनों का मेला
कौन है किसका मीत
करे ना कोई किसी से प्रीत
करे ना कोई किसी से प्रीत
जगह जगह पर हार खड़ी है
पायी किसने जीत ।।करे ना।।

1. सुधियों की बगिया का कोई
फूल हाथ ना आये
आज नियत के महामायपर
बादल के धन छाये
वर्तमान से तो अच्छा था
मेरा वही अतीत ।।करे ना।।

2. अपनी करनी पार उतरनी
यह संतो की बानी
कौन भला इस जग में बना है
वीर कर्ण सा दानी
मेरे गीतों ने पाया है
आंसू का संगीत।। करे ना।।

3. माया मानव अहंकार
ममता का बना पुजारी
कुछ भावी चिन्तन कर ले
सब की निश्चित ही है बारी
असमंजस में ही अनिल
ना जाये उमरिया बीत ।।करे ना।।

ग्राम/पो०–अगई,
जिला–प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश)

दवाई खरीदते समय

– ओमप्रकाश बजाज

लेटिन भाषा में कहा जाता है caveat emptor जिस का आशय है कि ग्राहक स्वयं सचेत रहे, आज के परिप्रेक्ष्य में यह और भी प्रासंगिक हो गया है।

इसी मई की बात है, मैंडीकल स्टोर से दवाई ली. देखा कि वह जनवरी में एक्सपायर हो चुकी थी। दुकान वाले को बताया तो पहले तो बोला कि एक्सपायरी डेट जून में है। स्पष्ट था कि वह जानबूझ कर जनवरी और जून को कन्फ्यूज़ कर रहा था। खैर उस ने दवाई बदल दी। औपचारिक खेद तक भी प्रकट नहीं किया। मैं ने ही कहा कि एक्स्पायरी वाली यह दवाई शैल्फ़ से हटा दो ताकि गलती से फिर किसी को न दे बैठो।

10 दिन बाद फिर दवाई लेने उसी दुकान पर गया। वही एक्स्पायरी वाली दवाई फिर दी गई। ज़ाहिर है कि उस ने वह दवाई शैल्फ से नहीं हटाई थी और शायद हटाएगा भी नहीं।

2.5 मि.ग्राम के स्थान पर 5 मि.ग्राम के कैप्सूल अनेक बार दे दिए गए है, बदलवाए हैं। डाक्टर की लिखी दवा के बदले मिलती जुलती दूसरी दवा दे देना आम बात है। स्ट्रिप में से कैप्सूल और गोलियां ऐसे काट कर दी जाती हैं कि एक्स्पायरी डेट और दाम आपके सामने आते ही नहीं।

मन में सवाल उठता है कि जब हम पढ़े लिखों के साथ ऐसा होता है तो बेचारे अनपढ़, कम पढ़े–लिखों के साथ क्या नहीं होता होगा! मैडीकल स्टोर और किराने की दुकान में कुछ तो फर्क होना चाहिए। मगर अकसर देखने में आता नहीं। मालिक अकसर कैश संभालता है। कम उम्र के छोकरे नुस्खा पढ़ते और दवाइयां देते हैं। मरीज़ के जीवन के साथ इस से बड़ा खिलवाड़ और भला क्या हो सकता है! विशेष रूप से ऐसे में जब बहुत सी दवाइयों के नाम के प्रथम अक्षर मिलते जुलते होते हों।

शासन प्रशासन को इधर ध्यान देने की न तो फुर्सत प्रतीत होती है न रूचि, ऐसे में ज़रूरी हो जाता है कि हम आप स्वयं जागरूक हो जाएं, सचेत रहें। अच्छा होगा कि खरीदने के बाद दवाई डाक्टर को दिखा दें।

बी–2, गगन विहार, गुप्तेश्वर,
जबलपुर–482001 (म.प्र.)

बाल कविता

'होमी गोली'

— राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय

नानी मैं तो बनूँ डाक्टर
फिर मैं तुमको सुई लगाऊँ
उई—उई कर नानी कांपे
फिर मैं तो उनको समझाऊँ

अच्छे बच्चे न डरें सुई से
काम न चलता कभी उई से
सुई से रोग ठीक हो जाता
रामू झट चंगा हो जाता

नानी कहे सुई के बदले
हमको दो औषधि की गोली
डर लागे है मुझे सुई से
मुझे चाहिये होमी गोली

डी—180ए, गली नं०—7,
मोहन गार्डन, नई दिल्ली—59

मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु

"आलस्य"

— श्रीमती पुष्पलता राय

इस जगत में मनुष्य की तीन श्रेणियाँ पाई जाती हैं— पहली वह, जो मुसीबतों के आने के भय से किसी भी कार्य को प्रारम्भ ही नहीं करते, दूसरे वह जो कार्य को शुरू तो कर देते हैं, लेकिन मुश्किलों को सामने देख उसे अधर में ही छोड़ देते हैं और तीसरे वह होते हैं, जो कार्य को प्रारम्भ करने के बाद उसे पूरा करके ही दम लेते हैं। फिर चाहे उन्हें कितनी भी मुसीबतों का समना क्यों न करना पड़े। इनमें पहली श्रेणी में आने वाले मनुष्य को हम "कर्मभीरू" कह सकते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो ये "कर्मभीरू" ही आलसी प्रवृत्ति वाले हो जाते हैं। अपने स्वभाव के कारण इनका शरीर और मन दोनों शिथिल पड़ जाता है और वह काम से ही जी चुराने लगते हैं।

मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु यही "आलस्य" का दुर्गुण है। इसके कारण मनुष्य अपने हर काम के लिए दूसरों का मुख देखता रहता है। उसकी स्वयं की शक्ति कमजोर पड़ जाती है और धीरे—धीरे वह कायर बन जाता है। उसका आत्म—विश्वास भी समाप्त हो जाता है। उसकी जिन्दगी नीरस हो जाती है। वह बुझा—बुझा सा रहने लगता है। जीवन ईश्वर द्वारा, मनुष्य प्रदत्त अमूल्य सौगात है और आलसी व्यक्ति इस सौगात की महत्ता ही नहीं समझ पाता, वह अपने अन्दर की रचनात्मक और सृजनात्मक शक्तियों को पहचान नहीं पाता, और अपने जीवन को पंगु बना देता है।

"आलसी" व्यक्तियों का सिद्धान्त भी बड़ा निराला होता है, बड़ी चतुरता से यह कहकर वह स्वयं को बचा लेते हैं कि—

"अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।।"

ये कार्य करने की बजाय भाग्य का सहारा ले लिया करते हैं। ये वही हैं जो अक्सर यह कहते सुने जा सकते हैं कि "समय से पहले और भाग्य से ज्यादा कुछ भी नहीं मिलता है।"

तुलसीदास जी ने सत्य ही लिखा है "मानस" में–

"कायर कहँ मन एक अधारा,
दैव–दैव आलसी पुकारा।"

यह आलस्य ही तो था जिसके कारण हम सदियों गुलामी का दामन पकड़े रहे थे। आलस्य ने बुद्धि और मन दोनों को कुण्ठित कर रक्खा था और हम नारकीय जीवन जीने को विवश हो गए थे।

कार्लाइल ने कहा है– "एकमात्र आलस्य में ही निरन्तर निराशा रहती है।" यह इच्छाशक्ति को समाप्त कर देता है जिसके कारण, व्यक्ति के अग्रसर होने के सारे रास्ते ही बन्द हो जाते हैं।

मनुष्य के भयंकर शत्रुओं में माना कि काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ का नाम लिया जाता है पर मेरी धारणा यह है कि आलस्य इन सबसे बड़ा है। यह मानव की चेतना शक्ति को क्षीण कर देता है और चेतना की समाप्ति के उपरान्त मानव, मानव कहाँ रह जाता है?

तब तो वह पशुवत हो जाता है।

भारत जैसी विशाल जनसंख्या वाला देश यदि पीछे रह जाए और जापान जैसा छोटा देश, अनेक आपदाओं को झेलते हुए भी आगे बढ़ जाए, तो उसके मूल में अकर्मण्यता और आलस्य का एक कारण तो निश्चित तौर पर विद्यमान है। इस तथ्य से इन्कार तो नहीं किया जा सकता है।

मैं एक शिक्षिका हूँ। विद्यार्थियों को अपने समक्ष रख, जब आलस्य के बारे में, मैं सोचती हूँ तो मुझे लगता है कि यह उनका सबसे बड़ा दुश्मन है। आलस से भरा विद्यार्थी, निश्चित तौर पर विद्या–प्राप्ति से दूर हो जाता है। सुबह उठकर पढ़ना उसके वश की बात नहीं होती, वह अपनी नींद नहीं छोड़ पाता, आलस्य के कारण सारे आवश्यक कार्य वह हड़बड़ी में करता है। ठीक से खा–पी भी नहीं पाता, जिससे उसका शरीर कमज़ोर होने लगता है, मस्तिष्क की ग्राह्य–क्षमता समाप्त हो जाती है। वह कक्षा में बच्चों से पिछड़ जाता है और तत्पश्चात् कुण्ठाग्रस्त हो हीनता की भावना से भर जाता है।

विद्यार्थी को सदैव ही स्मरण रखना चाहिए कि सफलता उसी व्यक्ति के कदम चूमती है जो "कर्मशील" होता है। केवल कामना करने मात्र से वस्तुएँ प्राप्त नहीं होती, उन्हें प्राप्त करने के लिए उद्यम करना पड़ता है। कहा भी गया है–

"उद्यमेन ही सिद्धयन्ति कार्याणि, न हि मनोरथै"

"न हि सुप्रस्य सिंहस्य, प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।"

इस बात को तो ऐतिहासिक साक्ष्य भी पुष्ट करते हैं कि जिस भी व्यक्ति ने आलस्य को छोड़कर, कर्मशीलता के रास्ते को अपनाया है उसने इस दुनिया में हमेशा अपना एक अलग "मुकाम" स्थापित किया है।

अन्ततः मैं यही कहूँगी कि मनुष्य के इतने बड़े शत्रु को अपनी ज़िन्दगी में पनाह देने को "मूर्खता–पूर्ण" कार्य ही कहा जाएगा। सफलता के सोपान पर चढ़ने का अधिकारी केवल "कर्मशील" व्यक्ति ही हो सकता है, आलसी तो कदापि नहीं।

टी.जी.टी. (हिन्दी)
नवयुग–स्कूल, मोतीबाग, नई दिल्ली–110021

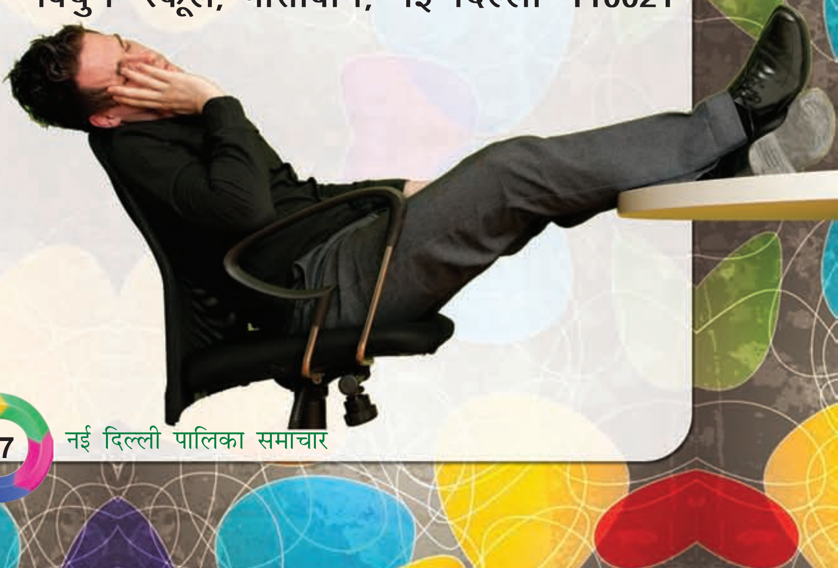

दो लघुकथाएँ

(1) पगड़ी

— डॉ. पूरन सिंह

कलवतिया ने अपने बेटे को ईमानदारी, हाडतोड़ मेहनत और ममता से पाला था। पति तो उसका बेटे की छठी से पहले ही उसे छोड़कर भगवान के पास चला गया था। बेटा जब जवान हुआ तो हर माँ की तरह कलवतिया के भी मन में उसकी शादी के सपने हिलोरें मारने लगे थे।

पूरा गांव कलवतिया की इज्जत करता था। उसका सम्मान करता था। सरपंच साहब ने अपनी ससुराल से उसकी शादी की बात चलायी थी। बात चली तो रस्म–परम्पराओं से होती हुई शादी तक पहुँच गई थी। कलवतिया की खुशी का पारावार नहीं था।

रस्म पगड़ी चल रही थी।

एक–एक कर कलवतिया के देवर, जेठ, गांव पड़ौस और मैके आदि के लोगों को मान सम्मान दिया जा रहा था। अंत में पगड़ी की बारी आई थी। पगड़ी किसे बांधी जाए। पति तो था ही नहीं। अभी सोच–विचार चल ही रहा था कि सरपंच साहब बोले थे, 'इसमें इतना सोचने की बात क्या है? कलावती ने अपने बेटे को माँ और पिता दोनों का दायित्व निभाते हुए पाला है इसलिए पगड़ी की सच्ची हकदार तो वही है। पगड़ी कलावती के ही सिर पर बांधी जानी चाहिए।

कलवतिया के देवर जेठों को हांलाकि बुरा तो बहुत लग रहा था लेकिन क्या करते सच तो यही था। कलवतिया का भाई भी मुँह फुलाए बैठा था। ये सब पगड़ी बंधवाने के लिए मुँह तो फुलाए थे लेकिन कलवतिया के बुरे दिनों में इन्होंने उसका कभी साथ देना तो दूर मुड़ कर भी नहीं देखा था।

थोड़ी देर शांति रही थी तभी लड़की का ताऊ अपनी मूंछों पर ताव देता हुआ बोला था 'सरपंच साहब, हम अपनी बेटी की शादी मर्दों के यहां करने आए है लुगाइयों के घर नहीं। कोई मर्द हो तो पगड़ी बांधवाओं। लुगाइयों के कम से कम हम तो पगड़ी नहीं बांधने वाले।'

लड़की के ताऊ की बात सुनकर सरपंच साहब सन्न रह गए थे। गांव वाले चुप। कलवतिया बिलख पड़ी थी .... कि .... कि .... तभी उसका बेटा चीखा था, 'मर्द – लुगाइयों की बात तो आप लोग जानें......... अगर शादी होगी तो पगड़ी मेरी माँ के ही सिर पर बंधेगी ...... नहीं तो शादी नहीं होगी।'

कलवतिया ने अपने बेटे को चुप भी करना चाहा था तब तक लड़की का ताऊ हुंकारा था, 'ठीक है चलो भाइयों मुझे ऐसे घर में शादी नहीं करनी जहां लुगाई मालिक हो।' लड़की के ताऊ के इतना कहते ही लड़की पक्ष के लोग चलने लगे थे। बेटा अपनी–माँ को अपनी बाहों में भरे सीना ताने खड़ा था।

(2) भ्रम

सुमित्रा के तीन बेटे हैं और तीनों को उसके पति ने खूब पढ़ाया लिखाया। आज तीनों ही नौकरी करते हैं। तीनों की शादी भी सुमित्रा के पति ने कर दी थी। वे सेवा में थे तभी।

सुमित्रा के पति समय से सेवा निवृत्त हुए और अपनी सेवा निवृत्ति के दो ढाई वर्ष के बाद ही भगवान को प्यारे हो गए। पति की मृत्यु के दुख और उनके वियोग में सुमित्रा बीमार रहने लगी तो सबसे पहली समस्या आई कि आखिर सुमित्रा को कौन रखे। जो बच्चे जब सुमित्रा ठीक थी और उसका पति कमाकर लाता था तब 'मम्मी–मम्मी' की रट लगाए रहते थे आज उन्हें रखने के लिए 'मुड़फुटाव्वैर' करने पर उतर आए थे।

'मम्मी को मझले वाला रखे मेरे पास पहले से ही बहुत जिम्मेदारियां है।' बड़े वाले का तर्क बिच्छू के डंक के मानिंद खड़ा रहता।

'मैं क्यों रखूं, छोटे वाला रखे। मम्मी ने सारी चीज–गहने उसी की बहू के पास रखे हैं। वही कराए इलाज मम्मी का।' मंझले वाला अपनी नौकरी पेशा पत्नी के सुर में सुर मिलाते हुए रेंकता।

'मैं मैं क्यों रखूं, मम्मी को। मैं तो सबसे छोटा हूँ। बड़े भइया को रखना चाहिए। बड़े भइया के पास ही तो पूरे घर की मालिकी है......... ना बाबा ना...... मैं .... मैं तो मम्मी को किसी कोस्ट (कीमत) पर नहीं रखने वाला।' अपनी पत्नी के घूंघट में मुंह छिपाकर छोटे वाला मिमियाता।

सुमित्रा की स्थिति दिनों दिन खराब होती जा रही थी। तभी पड़ौस के देवी चाचा ने सुमित्रा को सरकारी अस्पताल में भर्ती करवा दिया था। ज्यों–ज्यों सुमित्रा का इलाज चलता त्यों–त्यों उसकी तबियत और ज्यादा बिगड़ती जाती थी। हार–थककर एक दिन डॉक्टरों ने अपना निर्णय सुना दिया था। "हम चाहते हैं मां जी कि आप अपने घर जाएं और अपने अपनों के बीच ही रहें।"

डॉक्टरों की बात सुनकर सुमित्रा के होंठ कंपकपाए थे, 'बेटा, अगर आप मेरे बेटा बहुओं को मेरा अपना कहते हो तो मुझे इतना बता दो यदि वे मेरे अपने हैं तो फिर बेगाने कौन होते हैं।......बेटा..... मेरे बच्चों.... मैं घर नहीं जाऊंगी...... मैं इसी अस्पताल में ही मरना चाहती हूँ। कम से कम यहां कोई भ्रम तो नहीं है कि यहां कोई मे ....रा..... अ...प....ना।' और इतना कहने के ठीक दो घड़ी के बाद ही सुमित्रा अपनी अंतिम यात्रा पर निकल पड़ी थी।

पता– 240, बाबा फरीदपुरी,

वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली–110048

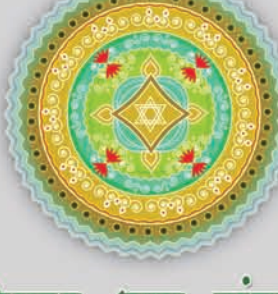

वर्ष प्रतिपदा (नव संवत्सर 2072)

– महेश चन्द्र शर्मा

भारतीय नववर्ष का प्रारंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही होता है और इसी दिन से ग्रहों, वारों, मासों और संवत्सरों का प्रारंभ गणितीय और खगोल शास्त्रीय संगणना के अनुसार होता है। आज भी जनमानस से जुड़ी हुई यही शास्त्रसम्मत कालगणना व्यावहारिकता की कसौटी पर भी खरी उतरी है।

यह समय दो ऋतुओं का संधिकाल है। यह प्रायशः मीन के सूर्य में पड़ता है। मीन और मेष के सूर्य में वसंत ऋतु होती है। नववर्ष के समय प्रकृति सरसों के फूल, आम्रमंजरी, वृक्षों में कोमल नव कोंपलों; मधूक पुष्प सुगंधि तथा कमल दल के प्रस्फुटन से अपनी प्रसन्नता व्यक्त करती हैं। साथ ही इसमें रातें छोटी और दिन बड़े होने लगते हैं। प्रकृति नया रूप धर लेती है। प्रतीत होता है कि प्रकृति नवपल्लव धारण कर नव संरचना के लिए ऊर्जस्वित तैयार होती है। मानव, पशु–पक्षी, यहां तक कि जड़–चेतन प्रकृति भी प्रमाद और आलस्य को त्याग सचेतन हो जाती है। वसंतोत्सव का भी यही आधार हैं। इसी समय बर्फ पिघलने लगती है। आमों पर बौर आ जाता है। प्रकृति की हरीतिमा नवजीवन का प्रतीक बनकर हमारे जीवन से जुड़ जाती है।

इसी प्रतिपदा के दिन उज्जयनी नरेश महाराज विक्रमादित्य ने विदेशी आक्रांत शकों से भारत–भू का रक्षण किया अतः इसी दिन से काल गणना प्रारंभ की। उपकृत राष्ट्र ने भी उन्हीं महाराज के नाम से विक्रमी संवत कह कर पुकारा। महाराज विक्रमादित्य ने आज से 2070 वर्ष पूर्व राष्ट्र को सुसंगठित कर शकों की शक्ति का उन्मूलन कर देश से भगा दिया और उनके ही मूल स्थान अरब में विजयश्री प्राप्त की। साथ ही यवन, हूण, तुषार, पारसिक तथा कंबोज देशों पर अपनी विजय ध्वजा फहराई। उसी के स्मृति स्वरूप यह प्रतिपदा नव संवत्सर के रूप में मनाई जाती थी और यह क्रम पृथ्वीराज चौहान के समय तक चला। महाराजा विक्रमादित्य ने भारत की ही नहीं, अपितु समस्त विश्व की रचना की। सबसे प्राचीन कालगणना के आधार पर ही प्रतिपदा के दिन को विक्रमी संवत के रूप में मनाना प्रारम्भ किया। इसी दिन को मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचंद्र के राज्याभिषेक अथवा रोहण के रूप में मनाया गया। यह पवित्र दिन ही वास्तव में असत्य पर सत्य की विजय दिलाने वाला है। इसी दिन महाराज युधिष्टिर का भी राज्याभिषेक हुआ और महाराजा विक्रमादित्य ने भी शकों पर विजय के उत्सव के रूप में मनाया। आज भी यह दिन हमारे सामाजिक और धार्मिक कार्यों के अनुष्ठान की धुरी के रूप में तिथि बनाकर मान्यता प्राप्त कर चुका है। यह राष्ट्रीय स्वाभिमान और सांस्कृतिक धरोहर को बचाने वाला पुण्य दिवस है। हम प्रतिपदा से प्रारंभ कर नौ दिन वासन्तिक नवरात्रों में छह मास के लिए शक्ति संचय करते हैं, फिर अश्विन मास के शारदीय नवरात्रों में शेष छह मास के लिए शक्ति संचय करते हैं।

चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा को गुड़ी पड़वा या वर्ष प्रतिपदा या उगादि (युगादि) भी कहा जाता हैं, इस दिन हिन्दू नववर्ष का आरम्भ होता है। शालिवाहन शक का प्रारंभ इसी दिन से होता है। 'युग' और 'आदि' शब्दों की संधि से बना है 'युगादि'।

कहा जाता है कि इसी दिन ब्रह्माजी ने सृष्टि का निर्माण किया था। इसी दिन से नया संवत्सर शुरू होता है। अतः इस तिथि को 'नवसंवत्सर' भी कहते हैं। चैत्र ही एक ऐसा महीना है, जिसमें वृक्ष तथा लताएँ पल्लवित व पुष्पित होती हैं। नववर्ष के आगमन पर प्रत्येक घर के ऊपरी भाग पर ध्वजारोपण करना

चाहिए। ध्वज कीर्ति और समृद्धि का प्रतीक है।

शत–शत प्रणाम नव संवत्सर को,
जो कल भी मंगलमय होगा।
मन भी हिंदू, तन भी हिंदू,
सकल सृष्टि हिंदू होगा।

यहाँ हिंदू का तात्पर्य है– 'हिं ('हिं' का अर्थ 'शक्ति') और दू ('दू' का अर्थ 'दो प्रकार') यथा दो प्रकार की शक्ति, यानी भौतिक और आध्यात्मिक शक्ति।' आध्यात्मिक एवं भौतिक (दर्शन एवं विज्ञान) दोनों अभिलक्षणों से युक्त जीवन–पद्धति को धारण करने वाला व्यक्ति हिंदू है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिंदू एक आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक जीवन–पद्धति है– Hindu is a way of Life.

नव वर्ष में प्रवेश करते समय मनुष्य आगामी वर्ष की सुखद कल्पना से आनन्दित होता हैं। मन में नई–नई उमंगें उठती हैं। उसकी आयु एक वर्ष और बढ़ गई, इसका उसे ज्ञान भी होता है। उसे स्मरण नहीं होता कि उसकी मृत्यु, एक वर्ष से और समीप आ गई। यथार्थ में इस दृष्टि को सामने रखते हुए समाज सेवा कार्य और भी अधिक शक्ति, गति तथा बुद्धि लगाकर करना चाहिए। जिससे वह अपनी पिछली कमी को पूरा कर आगे बढ़ सके। परंतु वह कभी–कभी अपनी उमंग में यह भी भूल जाता है कि बीते हुए समय में उसने देश और समाज के लिये कुछ भी नहीं किया; उसे अपने ऊँचे विचारों और कर्मों की विषमता का ज्ञान तक नहीं होता। यह बात केवल साधारण लोगों में भी मिलती हैं उँचे से ऊँचा निश्चय करने के पश्चात् मनुष्य का कार्य साधारण ही रह जाता है, उसका जीवन यों ही बीत जाता हैं परन्तु धार्मिक और सामाजिक व्यक्ति को ध्यान में रखें कि उसने एक बार दृढ़ विचार कर लिया है और वह उसे पूरा करेगा।

हमारे अंतःकरण के ऊँचे विचार केवल हमारे अन्तर्गत ही न रहें, उनका विकास अन्य लोगों में भी होना चाहिए।

ऐतिहासिक दृष्टि में वर्ष प्रतिपदा का महत्त्व इस प्रकार है–

1. भारतीय प्राचीन वांगमय के अनुसार सृष्टि का प्रारम्भ इसी दिन से हुआ। सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही ब्रह्माण्ड की रचना प्रारम्भ की। यही कारण है कि अपने देश में प्रचलित सभी के सभी संवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (वर्ष प्रतिपदा) से प्रारम्भ होते हैं।

2. प्रचलित संवतों में सर्वाधिक प्राचीन युगाब्द हैं इसे युधिष्ठिर संवत भी कहते हैं। क्योंकि महाराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक इसी दिन हुआ था।

3. प्रभु रामचन्द्र का राज्याभिषेक उत्सव वर्ष प्रतिपदा के दिन नहीं हुआ।

4. वासन्तिक नवरात्र (शक्ति की उपासना पर्व) इसी दिन से प्रारम्भ होता है।

5. सम्राट विक्रमादित्य ने आक्रमणकारी शकों को पूरी तरह से भारतभूमि से निकालकर उन्हें निर्णायक रूप से पराजित किया था उसी स्मृति में आज के दिन विक्रम संवत् प्रारम्भ हुआ।

6. महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा आर्य समाज की स्थापना वर्ष प्रतिपदा को ही की थी।

7. सिंध प्रान्त के प्रसिद्ध समाज रक्षक करूणावतार संत झूले लाल का जन्म दिन भी वर्ष प्रतिपदा ही है।

8. भारत का राष्ट्रीय संवत् (शालिवाहन शक संवत्) भी आज से ही प्रारम्भ होता है।

9. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक श्रद्धेय श्री केशव बलिराम हेडगेवार का जन्म भी आज के दिन अर्थात् नव–वर्ष प्रतिपदा को ही हुआ था।

पूर्व महापौर
संयोजक, साहित्य कला एवं संस्कृति प्रकोष्ठ
ई–81, दयानन्द कालोनी,
किशनगंज, दिल्ली–110007

दो लघुकथाएँ

दोमुंहे

– ओमप्रकाश बजाज

विचित्र संयोग हुआ, हमारे दो सहकर्मियों का निधन दिल का दौरा पड़ने से एक दिन के अंतराल से हो गया। गुरूवार को जिन की मृत्यु हुई वह दूसरे दिन सेवानिवृत होने वाले थे। जहां उन की पत्नि, बच्चे, मित्र, संबंधी इस आकस्मिक आघात से स्तब्ध और शोकाकुल थे वहीं एक ओर खड़े उनके कुछ सहयोगी दबी जुबान से यह टिप्पणी कर रहे थे, "बड़ा हिसाबी–किताबी था, जाते जाते भी संस्थान को चूना लगा गया। एक दिन पहले मर कर समूह बीमा का पांच लाख नकद और नालायक बेटे को अनुकम्पा नौकरी ले ही मरा।

शुक्रवार को जिन का देहावसान हुआ वह एक सप्ताह पूर्व सेवानिवृत हुए थे। उन्हीं सहयोगियों की टिप्पणी यहां कुछ ऐसी थी, "जिन्दगी भर फिसड्डी ही रहा। मरना ही था तो एक सप्ताह पहले मरता। बेकार में पांच लाख नकद और बेटे की नौकरी का नुकसान कर गया।"

अपने

कब सोचा था कि भाग्य ऐसा खेल भी खेलेगा! जीवन रोज़ी–रोटी की भागमभाग में, परिवार के पालन–पोषण में, दिनरात की ऊहापोह, कशमकश, संघर्ष में न जाने कब बीत गया, पता ही नहीं चला सोचा था कि सेवानिवृति के बाद फुर्सत का आनन्द लेंगे। जिंदगी के बचेखुचे दिन आराम से बिताएंगे।

अचानक ही तकलीफ शुरू हुई। बताया गया कि गुर्दों ने काम करना बंद कर दिया है। कम से कम एक गुर्दे का प्रत्यारोपण अविलम्ब करवाना ही होगा और कोई विकल्प नहीं। जीवन नर्क हो गया। न जाने किन बुरे कर्मों का फल मिला है।

परिवार में खुसपुस शुरू हुई। गुर्दा आए कहां से बड़े बेटे के खून ने ज़ोर मारा। सम्भव है लोकलाज का भय रहा हो। उस ने अपना एक गुर्दा देने की बात मुंह से निकाली ही थी कि बहूरानी ने रो रो कर बुरा हाल कर लिया। अपनी और बच्चों की कसमें दे डालीं। मायके से अपने माता पिता को बुलवा लिया।

बड़ा बेटा मजबूर हो गया।

मझली बहू ने तो दो टूक बात कही कि जब बड़े भाई साहिब नहीं दे रहे तो हम ही क्यों दें? हम भी तो बाल बच्चे वाले हैं। ऊपर से यह भी जोड़ दिया कि पापा जी तो खेले खाये पक्की उम्र के हैं यूं भी कितने दिन और जिएंगे। छोटा बेटा अभी कुंआरा है। मां का लाडला भी है। उस की मां ने ही उसकी पैरवी की कि इस बेचारे ने अपना गुर्दा दे दिया तो कल को इसे अपनी लड़की कौन देगा। बेचारी नारी! कैसी असमंजस और दुविधा की स्थिति में फंस जाती है। पति और पुत्र में किसे वरीयता दे। अपने हाड़मांस का पलड़ा ही अंततः भारी पड़ता है।

अब समाचार पत्रों में विज्ञापन दिए जा रहे हैं। अस्पतालों से संपर्क किया जा रहा है। सुना है लाख डेढ़ लाख में गुर्दे मिल जाते हैं। सोचता दूँ सेवानिवृति पर मिला पैसा भावुकतावश बेटों बहुओं में न बांटा होता!

विजय विला, 166–कालिंदी कुंज,
पिपलिहाना, रिंग रोड
इंदौर–452018 म.प्र.

लेखकों से अनुरोध

'पालिका समाचार' पत्रिका में किसी भी विधा की उत्कृष्ट रचना का स्वागत है।
रचना कागज़ पर एक तरफ हस्तलिखित या टंकित हो।
लेखक रचना की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रखें।
रचना का मौलिक एवं अप्रकाशित होना अनिवार्य है।
अपनी रचनाओं को लेखक editor palika samachar@gmail.com पर मेल कर सकते हैं।

पाठकों से

प्रिय पाठको !

'पालिका समाचार' पत्रिका में प्रकाशनार्थ प्रेषित किसी भी विधा की रचना में राजनैतिक व धार्मिक जातिगत टिप्पणी नहीं होनी चाहिये ।

–सम्पादक

गुरू का महत्व

– नियति जोशी

वो कौन सा है पद
जिसे देता ये जहाँ सम्मान
वो कौन सा है पद जो करता है देशों का निर्माण
वो कौन सा है पद
जो बनाता है इंसान को इंसान
वो कौन सा है पद जिसकी छाया में मिलता ज्ञान
वो कौन सा है पद
जो कराए सही दिशा की पहचान
"गुरू" है इस पद का नाम
गुरू का महत्व क्या होता है
पहले ये थी ना जानती
वह गुरू है जो हमारे भविष्य को सजाते संवारते हैं
बुरी आदतों को हमारी यह सुधारते हैं
देश का महान नागरिक बनने को बताते हैं
और लोगों की मदद करने का पाठ पढ़ाते हैं
गुरू का महत्व न होगा कम,
भले करलें कितनी भी उन्नति हम।
वैसे तो है इंटरनेट पर हर प्रकार का ज्ञान
पर अच्छे बुरे की नहीं है हमें पहचान
नहीं है शब्द, कैसे करूँ धन्यवाद
बस चाहिए हर पल आप सबका आशीर्वाद
हूँ जहाँ आज मैं उसमें है बड़ा योगदान,
आप सबका, जिन्होंने दिया मुझे इतना ज्ञान।
आपने बनाया है मुझे इस योग्य
कि प्राप्त करूँ मैं अपना लक्ष्य

पाती प्यार भरी

जिस दिन का सपना देख माता–पिता है जीते।
उस सपने की हर कड़ी, हर दिन है हम सीते।
उसी सपने की एक कड़ी मैंने पार करी है
और वो मेरी मेहनत आपकी उम्मीदों में खरी उतरी है।
क्योंकि इस साल मैंने किया अथक प्रयास
जिससे आपके मन में भर जाए उल्लास
आपने मुझे हर दिन आत्मविश्वास से भरा
और उसका उपयोग मैंने अपनी विद्या में करा
माँ प्रेम है, माँ धर्म है
माँ तत्व है, माँ मर्म है
वह जलज है, है जल वही
वह रोशनी, दीपक वही।
भगवान का दूसरा रूप है आप
आपकी हँसी से घर में महके गुलाब
माँ सबसे बड़ी शिक्षक है, यह मैंने इन परिक्षाओं में जाना,
क्योंकि हर कठिन समय में मेरी माँ ने मुझे संभाला।
मैं जो आपकी परछाई हूँ, वक्त की चाल, रोजगार
की ढाल, सब बना लिए मैंने औजार पर माँ मुझमें
इतनी शक्ति भर देना, गौरव से सर उठा रहे तुम्हारा,
कर जाऊँ ऐसा कुछ जीवन में, बन जाऊँ हर माँ की
आँख का तारा।
बस यही चाहती हूँ कि आपको अपनी बेटी पर गर्व हो।
जिससे हर दिन घर पर पर्व ही पर्व हो।
आपसे मुझे बस यह है कहना।
सफल होकर ही मुझे है रहना।

115–80, कुर्मांचल निकेतन,
पटपड़गंज, दिल्ली–110092

"व्यवसायीकरण का प्रभाव खेल पर"

– चन्द्र शेखर भट्ट

व्यवसायीकरण एक ऐसा शक है जिसका तात्पर्य लाभ अर्जित करना है, आज के युग में व्यवसायीकरण तेजी से फैल रहा है अब ये व्यवसायीकरण खेल के मैदान में भी देखने को मिल रहा है।

ऐसा ही एक खेल है क्रिकेट जिसमें पैसा है शोहरत है और लोगों की दीवानगी की तो हद है। उद्योगपति एवम् फिल्मी सितारे इसमें निवेश कर रहे है और लाभ अर्जित कर रहे है। ज्वलन्त उदाहरण है। क्रिकेट के खेल में व्यवसायीकरण तेजी से बढ़ रहा है इसका कारण यह है कि बुढ़ा हो या जवान हर कोई क्रिकेट के प्रति दिवाना है हमारे देश का राष्ट्रीय खेल हाकी है पर किसी बच्चे से पुछो बड़े होकर क्या बनोंगे तो कहेगा "सचिन तेन्दुलकर"। इसी लोकप्रियता को बड़ी–बड़ी कम्पनियां भुना रही है। जब से क्रिकेट का नया प्रारूप आया है तब से क्रिकेट जगत में व्यवसायीकरण बढ़ गया है पहले क्रिकेट के सिर्फ दो प्रारूप होते थे। वन्डे और टैस्ट अब नया प्रारूप 20–20 अस्तित्व में आया और सिर्फ तीन घण्टे में दोनो पारियां खत्म हो जाती है ओर तब से क्रिकेट जगत में पैसों की बरसात सी होने लगी।

इसकी एक सबसे बड़ी कमी को देखे तो पहले खिलाड़ी देशभावना से खेलते थे और अब पैसो के लिए खेल रहे है जिसका जितना ज्यादा अच्छा प्रदर्शन उसे उतना ज्यादा पैसा।

खेलों का टेलीविज़न एंव रेडियो और अखबारों में खबर के कारण खेलों का व्यवसायीकरण बढ़ रहा है। कोई भी कम्पनी बहुत सा पैसा देकर खेलों के प्रसारण का अधिकार खरीद लेती है। अब हर तरह के खेलों का व्यवसायीकरण होता जा रहा है और इन सब में धोखा हमारे दर्शक लोग खाते है जिन्हें ये नहीं पता होता की खिलाड़ी खेल भावना से खेल रहा है या कमाई के लिए और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए।

खेल कुछ के व्यवसायीकरण का एक लाभ तो ये हुआ है कि इससे रोजगार के स्तर में काफी सुधार हुआ है हर कोई खेल को अपना कैरियर बनना चाहता है क्योंकि अंतराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी को रेलवे या फिर किसी और विभाग में उच्च पद की नौकरी मिल जाती हैं अब छोटे–छोटे शहरो में कई प्रकार की खेल एकेडमियाँ खुल गई है।

व्यवसायीकरण के कारण ही तम्बाकू एवं शराब उत्पादन करने वाली कम्पनियाँ इन खिलाड़ियों से इन का विज्ञापन करवाती है ओर लाभ अर्जित करती है और हमारे खिलाड़ी अपने मूल उद्देश्य से भटक जाते है और अपने खेल के स्तर को घटाते हैं।

खेलों के व्यवसायीकरण के कारण ही सट्टेबाजी और फिक्सिंग जैसी चीजों को बढ़ाया मिलता है और उद्योगपति खेल को प्रोत्साहित करने के लिए उसमें पैसे नहीं लगाते बल्कि अपने लाभ अर्जन के लिए ऐसे कार्य करते हैं।

व्यवसायीकरण के लिए हर कोई अलग–अलग बात करते है। कोई कहता है की खेल के व्यवसायीकरण से खिलाड़ियों को आर्थिक लाभ होता है जबकि इसके विपरित सच्चाई ये है की अधिक लाभ तो उद्योगपतियों को होता है जो इसमें निवेश करते हैं।

खेल बिना खर्च के नहीं हो सकता पर अत्याधिक खर्च खेल भावना का ह्रास कर रहा है। अनुचित खर्च खेल का ह्रास कर रहा है। अनुचित खर्च खेल भावना और गरिमा को घटाते हैं। आई०पी०एल० में चियर गर्ल्स का प्रदर्शन इसका उदाहरण है।

अन्त में खेलों के व्यवसायीकरण पर यही कह सकते है कि खेल के व्यवसायीकरण से खेल भावना का ह्रास हो रहा है। इसलिए यह जरूरी है कि व्यवसायीकरण पर रोक लगे और यह जरूरी है कि खेल को खेल भावना से खेला जाए और आर्थिक उद्देश्य को खेलों से दूर रखा जाए।

कोष विभाग
न.दि.न. परिषद्
पालिका केन्द्र

'नई दिल्ली पालिका समाचार' संबंधी विवरण

फार्म–4

प्रकाशन स्थल	:	हिन्दी विभाग, नई दिल्ली नगर पालिका परिषद्, पालिका केन्द्र, नई दिल्ली–110001
प्रकाशन की अवधि	:	द्विमासिक
मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक	:	श्रीमती अनीता जोशी
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	हिन्दी विभाग, नई दिल्ली नगर पालिका परिषद्, पालिका केन्द्र, नई दिल्ली–110001
उन व्यक्तियों के नाम तथा पते जो पत्रिका के स्वामी हैं तथा जो पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझीदार या हिस्सेदार हैं	:	नई दिल्ली नगर पालिका परिषद्, पालिका केन्द्र, नई दिल्ली–110001

मैं, अनीता जोशी एतद् द्वारा घोषित करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गये विवरण सत्य हैं।

अनीता जोशी
ह० प्रकाशक सम्पादक

"बच्चे और मोबाइल फोन"

– **आशा ठुकराल**

"बच्चों को मोबाइल फोन देना कहाँ तक उचित है।"

उपरोक्त कथन पर विचार करना अत्यंत आवश्यक है। इस बारे में सबके अपने–अपने विचार और तर्क हैं फिर भी यह कहना गलत नहीं होगा कि बच्चों को मोबाइल देना उनके शरीर और मानसिकता को नुकसान देना है यदि इसका सही दिशा में उपयोग न किया जाए।

एक समय में मोबाइल फोन बहुत उपयोगी सिद्ध माना जाता था क्योंकि इसके बहुत से फायदे सामने आते थे जैसे व्यक्ति हर समय संपर्क में रहता था। कोई भी जरूरी जानकारी किसी भी समय उस तक पहुँचाई जा सकती थी किसी भी परेशानी के समय वह तुरंत अपने परिजनों से संपर्क कर सकता था इंटरनेट आने से वह अपनी कई समस्याओं के समाधान उसकी सहायता से कर सकता था।

लेकिन जब से बच्चे इसकी तरफ आकर्षित होने लगे हैं यह कई समस्याओं का भी उत्तरदायी बन गया है क्योंकि बच्चों को अच्छाई बुराई की पूरी समझ नहीं होती इसलिए वे कई बार नासमझी में इसका दुरूपयोग करने लगते है।

पहले बच्चे पढ़ने के बाद खेलकूद में अपना समय व्यतीत किया करते थे जिनसे प्रकृति से उनका साथ बना रहता था तथा साथ ही खेल–खेल में व्यायाम भी हों जाता था जिसके लिए अलग से उन्हें समय नहीं मिल पाता थां इस तरह से वे स्वस्थ्य भी रहते थे। खेलने के पश्चात वे कई बार अपने दोस्तों के घर भी जाया करते थे अतः अभिभावकों की निगरानी में रहते थे। अब मोबाइल फोन का अत्याधिक चलन होने से वे हर समय उसपर व्यस्त रहते है बैठे हुए या लेटे लेटे दोस्तों से बातचीत हो जाती है कहीं आना जाना कम हो गया है अधिकतर समय वे मैसेज में व्यस्त रहते हैं। खेलकूद से ध्यान बिलकुल हट गया हैं क्योंकि वे मोबाइल में दी गेम्स खेलते है तथा शारीरिक व्यायाम बहुत कम हो गया है। कई तरह के साइबर क्राइम भी सामने आते हैं। अश्लील फोटो और व्यस्क साइटस भी उनके मानसिक और शारीरिक विकास पर प्रभाव डालती हैं। इसलिए आज के बच्चों में शारीरिक और मानसिक समस्याओं को अधिक देखा जाता है।

इसलिए हमें चाहिए कि मोबाइल सोलह साल से कम उम्र के बच्चों को बिल्कुल भी प्रयोग के लिए नही देना चाहिए। मेडिकल साइंस में भी कहा गया है कि बच्चों की कोशिकाएं कमज़ोर होती हैं और मोबाइल फोन की रेडियशन उनको बड़ों से अधिक नुकसान पहुँचाती है। बच्चे इन्हें स्कूल भी ले जाने लगे हैं अध्यापकों को यह शिकायत रहती है कि क्लास के दौरान भी बच्चे मोबाइल पर मैसेज करने या गेम्स खेलने में व्यस्त रहते हैं। उनका ध्यान अध्यापक द्वारा पढ़ाए जा रहे पाठ पर न होकर मोबाइल फोन पर होता है अतः ऐसे बच्चे अन्य बच्चों की तुलना में पढ़ाई में पीछे रह जाते हैं।

इसलिए यदि बच्चों को मोबाइल दिया जाए तो यह जरूरी है कि उनपर पूरी निगरानी भी रखी जाए। बच्चों और अभिभावकों को साइबर क्राइम से अवगत कराते रहना चाहिए।

अंत में यह कहना गलत नहीं होगा कि जब तक अत्यंत आवश्यक न हो बच्चों को मोबाइल से दूर रखा जाए और उन्हें एक स्वस्थ और सुंदर जीवन प्रदान किया जाए।

(कनिष्ठ सहायक)
जन स्वास्थ विभाग

कहां खो गई नानी-दादी की कहानी

– सन्दीप कपूर

बचपन में स्कूल की छुट्टियों में ननिहाल जाने पर मेरी नानी हम सब बच्चों को अपने पास बिठाकर मजेदार कहानियां सुनाया करती थी। उनकी कहानियों का विषय राजा, राजकुमार, राजकुमारी व दुष्ट जादूगर हुआ करते थे। अकबर–बीरबल व विक्रम–बेताल के किस्से हमें अपने साथ बांधे रखते थे। कभी–कभार नानी हमें भारत विभाजन के दौरान पाकिस्तान से भारत आने के दौरान हुए मुश्किलों भरे सफर की जानकारी भी तफसील से देती, जो उस समय हमारे लिए रोचक किस्सों से कम नहीं होता था। आज नानी नहीं रही, लेकिन दिमाग पर जोर डालते ही उसके किस्से–कहानियां ताजा हो उठते हैं। मेरी तरह वे सभी लोग खुशनसीब होंगे जिन्हें बचपन में अपने दादा–दादी, नाना–नानी के साथ इस तरह की बैठकों का अनुभव होगा।

कुछ दशक पहले ही बच्चों में कॉमिक्स बेहद लोकप्रिय थीं। रंग–बिरंगी छटा व साफ–सुथरे मनोरंजन के साथ ही कॉमिक्स ने बच्चों को ज्ञान भी दिया। इन कॉमिक्स के पात्रों में फैंटम, चाचा चौधरी, लम्बू–मोटू, राजन–इकबाल, फौलादी सिंह, महाबली शाका, ताऊजी, चाचा–भतीजा, जादूगर मैंड्रेक, बिल्लू, अंकुर, पिंकी, रमन, क्रुकबांड सरीखे तमाम पात्र बच्चों को अपने ही परिवेश के प्रतीत होते थे। जो उनमें फैंटेसी के अलावा रोमांच, साहस, चतुराई उभारते हुए उनकी कल्पनाशक्ति विकसित करते थे। अमर चित्रकथा ने भारतीय संस्कृति पर कॉमिक रचकर बच्चों का अपार ज्ञानवर्धन किया।

इतना ही नहीं किशोरों के लिए साहस, रोमांच व ज्ञान से भरपूर पॉकेट बुक्स भी प्रकाशित की गई। अस्सी–नब्बे के दशक में पाकेट बुक्स का जादू भी बाल पाठकों के दिलोदिमाग पर छाया रहा। डायमंड, मनोज, राजा, शकुन, पवन, साधना पाकेट बुक्स के अलावा अन्य जाने–माने प्रकाशनों ने बच्चों के लिए भरपूर छोटे उपन्यास प्रकाशित किए। उस समय बच्चों में भी यह क्रेज रहता था कि उन्होंने अपने पसंदीदा पात्रों की पाकेट बुक पढ़ी या नहीं। बच्चे आपस में अदल–बदल कर अपनी पसंदीदा किताबें पढ़ने से नहीं चूकते थे।

बालरूचि के अनुरूप ही मधु मुस्कान, लोटपोट, पराग, टिंकल, नंदन, बालमेला, चंपक, चंदामामा, चकमक, हंसती दुनिया, बालहंस, बाल सेतु, बाल वाटिका, नन्हे सम्राट, देवपुत्र, लल्लू जगधर, बालक, सुमन सौरभ जैसी बाल–पत्रिकाएं भी प्रकाशित हुई, जिनमें से कुछ आज भी बाल पाठकों को लुभा रही हैं। सरकारी तौर पर भी नन्हें तारे, बाल वाणी जैसी बाल–पत्रिकाएं शुरू की गई जो काल कलवित हो गई। अलबत्ता प्रकाशन विभाग की बाल भारती व नेशनल बुक ट्रस्ट की पाठक मंच बुलेटिन आज भी नियमित प्रकाशित हो रही हैं। यदि केंद्र सरकार तथा राज्य सरकारें बाल–साहित्य प्रकाशन व प्रोत्साहन की दिशा में गंभीरता से रूचि ले तो यह भावी नागरिकों

के हित में एक अच्छा कदम होगा।

दैनिक समाचार–पत्रों में भी अपने बाल–पाठकों का खास ख्याल रखते हुए प्रायः रविवारीय विशेषांक में बाल–साहित्य को प्रमुखता से स्थान दिया जाता था। परंतु बाजारवाद के मौजूदा दौर में बाल साहित्य अब केवल औपचारिकता बनकर रह गया है तथा सृजनात्मक साहित्य के स्थान पर बच्चों को ज्यादातर इंटरनेट की सामग्री परोसी जा रही है। रोचक–मजेदार बाल कथाओं का तो अब अभाव हो चला है। यही नहीं बाल–साहित्यकार भी खुद को उपेक्षित महसूस करते हुए साहित्य की अन्य विधाओं की ओर उन्मुख होते जा रहे हैं। यह स्थिति बाल–साहित्य के लिए बेहद घातक है।

दूसरी तरफ आज के व्यवस्तता भरे समय में जहां भौतिकवाद ने रिश्तों में दूरियां बना दी हैं, वहीं टेलीविजन तथा कंप्यूटर ने बचपन को एक तरह से लील लिया है। मनोरंजन के नाम पर बच्चों के पास विडियो गेम, कंप्यूटर, इंटरनेट, केबल टीवी से लेकर मोबाइल जैसे तमाम उपकरण भले ही आ गए हों पर इनमें से कोई भी उन्हें स्वस्थ मनोरंजन दे पाने में सक्षम नहीं। वैज्ञानिक शोधों से पता चला है कि इंटरनेट, टीवी व वीडियो गेम बच्चों में तनाव, हिंसा, कुंठा व मनोरोगों को जन्म दे रहा है। इन उपकरणों से जुड़े रहने वाले बच्चों की आंखों पर मोटे–मोटे चश्मे भी देखे जा सकते हैं। पश्चिमी संस्कृति से प्रेरित कार्टून फिल्में व अन्य डब किए गए कार्यक्रम बाल सुलभ मन में अश्लीलता व विकारों के बीज बो रहे हैं। उनकी भाषा भी व्यवहार की तरह संस्कारविहीन होती जा रही है।

इस परिस्थिति में बच्चों में नैतिकता, शिष्टाचार, ईमानदारी सहित अन्य सद्गुणों के विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसलिए जरूरी है कि हम सब बाल–साहित्य की प्रासंगिकता व उपादेयता को समझते हुए उसे बाल–जीवन में स्थान दें। बच्चों को संस्कारवान बनाने में गीताप्रेस, गोरखपुर का बालसाहित्य व अमर चित्रकथा बेजोड़ है। बाल–साहित्यकारों को एक चुनौती की तरह भारतीय आधुनिक परिवेश के हिसाब से अपने साहित्य को विकसित करना चाहिए। अभिभावकों को भी बच्चों पर स्कूली पढ़ाई का बोझ न लादते हुए कुछ समय स्वाध्याय के लिए प्रेरित करना चाहिए। बच्चों को जन्मदिन व अन्य अवसरों पर बालरूचि की पुस्तकें व पत्रिकाएं भेंट करनी चाहिए। साहित्य पठन के इन पलों में बच्चों का स्वस्थ मनोरंजन होने के साथ ही उनमें मानवीय गुण तो विकसित होंगे ही, एकाग्रता व शिक्षा के प्रति रूझान भी बढ़ेगा।

88/1395, बलदेव नगर,
अंबाला, सिटी–134007 (हरियाणा)

आवश्यक सूचना

1. सभी लेखक अपनी रचना के साथ अपना पता पिनकोड सहित व मोबाइल नं० लिखें। पता पूरा न होने के कारण लेखकों को मनीआर्डर भेजने में कठिनाई आती है।
2. लेखक रचना की मूल प्रति भेजे। फोटो कापी रचना पत्रिका में प्रकाशित नहीं की जायेगी।
3. समीक्षा के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ अवश्य भेजें।
4. नए लेखकों को अनुरोध किया जाता कि वह अपनी रचनाएँ पते सहित भेजें। नए लेखकों की रचनाओं को ''नवलेखन'' के अन्तर्गत प्रकाशित किया जायेगा।
5. अप्रकाशित रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी।

– **सम्पादक**

शिक्षा के क्षेत्र में
स्पेशल-एजुकेशन एक उपलब्धि

– मनीषा वैद

12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद मुझे ऐसा लगा कि मुझे कोई काम करना चाहिए और अगर मैं उसे नहीं कर रही हूँ तो ईश्वर मुझसे खुश नहीं होगें। तभी एक दिन मैंने स्पेशल एजुकेशन के बारे में पढा। कुदरती तौर पर दिमाग का पूरा विकास न होने की वजह से या फिर दिमाग का कोई एक भाग सक्रिय न होने की वजह से कुछ बच्चों की देखभाल, अन्य बच्चों से हटकर करने की जरूरत होती हैं। ऐसे बच्चों को दुनिया में तालमेल बिठाने में थोड़ा–सा अधिक वक़्त लगता है, इसलिए जरूरी हैं कि इन बच्चों को स्पेशल एजुकेटर ही पढ़ाए।

एक स्पेशल एजुकेटर के लिए जरूरी हैं कि आप बच्चों के साथ काम करने के इच्छुक हों और साथ में ही आप उनकी मानसिक जरूरतों को भी समझें ये पढ़कर सचमुच में मुझे अहसास हुआ कि मेरा पहला लक्ष्य खुशी महसूस करना हैं तो मैंने इस कोर्स में अपना दाखिला करवा लिया। मेरे कार्यक्षेत्र में शारीरिक रूप से अक्षम जैसे कि दृष्टि दोष या श्रवण शक्ति दोष, मॉंसपेशियों के अल्प विकास, अल्प विकसित मस्तिष्क व मानसिक रूप से अक्षम बच्चों के उपयुक्त पालन–पोषण व शिक्षा की व्यवस्था आदि करना आया।

आपको अपनी जिंदगी में देखें हुए एक उदाहरण को देते हुए कहना चाहुँगी कि एक डॉक्टर का संबंध मरीज से सिर्फ दवाइयों तक जुड़ा होता है, लेकिन एक स्पेशल एजुकेटर सामाजिक, आर्थिक, व्यावसायिक और मेडिकल परामर्शदाता का एक साथ काम करता है।

नीरज दृष्टिहीन एक लड़की का नाम हैं उसने B.ed किया जिसकी वजह से आज वह अध्यापिका के पद पर कार्यरत हैं। ब्रेल लिपि की सहायता से वह अपनी पढ़ाई करने में सक्षम हो गई। सहपाठियों ने उसे टेप रिकार्डर दिया ताकि टेप करके वह कई बार सुन सकें और याद रख सकें। पेपरों के समय उसे लिखने के लिए स्क्रिपटर दिया जाता था। मोडिफाईड कम्प्यूटर से टाईपिंग सिखाई गई थी। काफी कठिनाइयों का सामना करके वह अपने उद्देश्य तक पहुँच पाई। किसी ने सही कहा है कि हम जो सोचे वह पूरा कर सकते हैं।

ऐसे बच्चों को ध्यान में रखते हुए हमारी सरकार ने मॉडल ऑफ इनक्लूशन शुरू किया है जिसकी वजह से हर स्कूल में स्पेशल एजुकेटर नियुक्त किए जा रहे हैं। हैंडिकैप बच्चों को नॉर्मल बच्चों के साथ पढ़ाया जा रहा है जिससे किसी भी बच्चे में हीनभावना ना आए।

अंत में मैं अपनी बात को समाप्त करते हुए यहीं कहना चाहूँगी कि "दुनिया की समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करने की बजाय विश्वास, प्रेम प्रचुरता, शिक्षा और शांति पर ध्यान व ऊर्जा लगाएँ।

स्पेशल एजुकेटर
न.पा. सह–शिक्षा मा. विद्यालय
नई दिल्ली, सागंली मैस